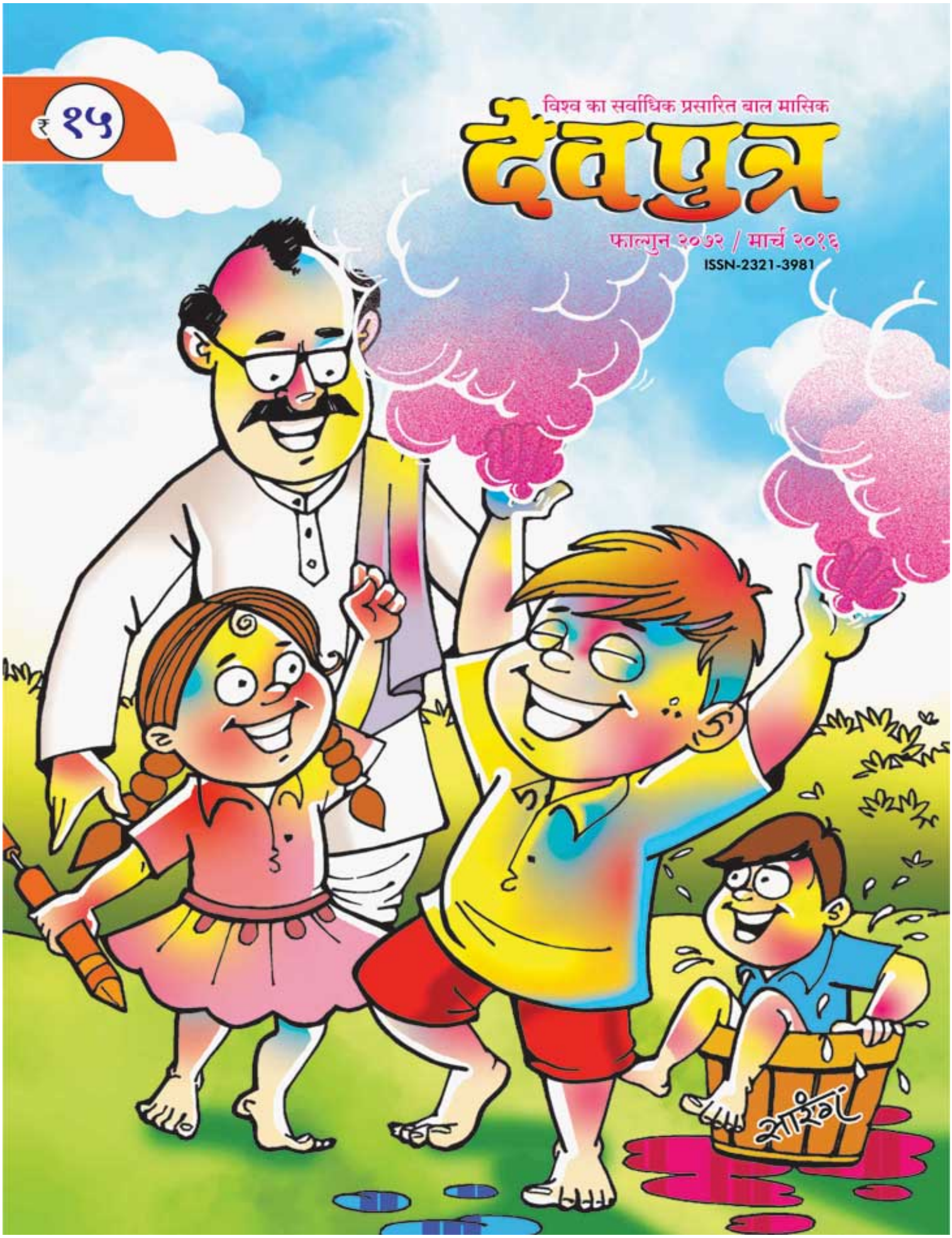

₹ १५

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन २०७२ / मार्च २०१६
ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन २०७२ ▪ वर्ष ३६
मार्च २०१६ ▪ अंक ९

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, २४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

ईश्वरचंद्र विद्यासागर केवल विद्या के सागर ही नहीं थे, अनेक मानवीय गुणों के आगार भी थे। सेवा, सहिष्णुता, समर्पण और स्वाभिमान उनमें कूट-कूट कर भरे थे। परदुःख कातरता के वे अनुपम उदाहरण थे। एक दिन अपने मित्र विद्यारत्न के साथ बाजार से अपने गांव लौटते समय उन्होंने रास्ते में सड़क किनारे पड़े हुए एक अधेड़ को देखा। हैजे का यह मरीज परिवार से भी दुत्कारे जाने के कारण बड़ी असहाय अवस्था में पड़ा था। शरीर से बदबू आ रही थी। ईश्वरचंद मित्र के साथ वहां रुके उसे झाड़ा पोंछा और अपनी पीठ पर बिठाकर उसे गांव ले आए। मित्र ने उसकी गंदी पोटली उठा ली। कुछ दिन के सेवा सुश्रुषा और चिकित्सा से वह ठीक हो गया। ईश्वरचंद्र की प्रसन्नता का पारावार नहीं था।

प्यारे बच्चो! क्या कभी विचार किया है कि सुख केवल बहुत अच्छी पढ़ा लिखकर विद्वान बनने या बड़ी नौकरी पाकर आई.ए.एस., आई.पी.एस. या वकील, प्रोफेसर, डाक्टर और इंजीनियर बनने में ही नहीं है। सच्चा सुख तो परोपकार और परसेवा में है। तुलसीदास जी ने इसे सबसे बड़ा धर्म ही कहा है। देखिए मानस की यह पंक्तियाँ-

"परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।"

ऐसे कितने ही लोग है जिन्होंने अपनी धन सम्पदा को पर सेवा को लुटा दिया है। अपने कुबेर जैसे भण्डारों को सेवा कार्य के लिए खोल दिया है और इतना ही नहीं तो अपने शरीर और सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ नर को नारायण मानकर उनकी सेवा में लगे हैं। अनेक संगठन हैं जिनके द्वारा सेवा के सामूहिक प्रयत्न चल रहे हैं। कोई चिकित्सालयों में मरीजों के लिए निःशुल्क दवा और चिकित्सकों की व्यवस्था कर रहा था, तो कोई वहां उनको और उनके परिवारों को भोजन के पैकेट पहुंचा रहा है। किसी ने उनके कृत्रिम अंगों के निर्माण की व्यवस्था की है तो किसी ने उनके ऑपरेशन की। कहीं बड़ी जांचों के लिए कोष बनाया है तो किसी ने पीड़ित, असहाय या मानसिक विकलांगों के लिए आश्रम बनाकर रहने, खाने-पीने और चिकित्सा की व्यवस्था की हैं किसी ने उनको वहां तक पहुँचाने के लिए वाहनों की। कोई सेवा बस्ती में जाकर गरीब बच्चों को पढ़ा रहा है तो कोई उनके लिए फीस और पुस्तकें जुटा रहा है। अनेक माता और बहिनें अपने पारिवारिक कार्यों में से समय निकालकर अपनी रुचि के अनुसार सेवा कार्यों में जुटी हैं।

श्रेष्ठ जीवन के लिए ऐसा कोई एक व्रत सुख तो देता ही है मन को अपार आनन्द भी देता है। तो विचार करें कि यह सुख यह आनन्द हमारे हिस्से में कैसे आ सकता है?

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- गायब हो गए रंग – राजीव सक्सेना ०५
- होली का खेल – बिलास बिहारी १२
- होली का त्योहार भला – डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष' १६
- मिलन संध्या – डॉ. सेवा नन्दवाल २६
- बिछुड़े दोस्त मिले – अर्चना सोगानी ३४

हास्य नाटक

- बदलाव के लिए कुसुम अग्रवाल १८

आलेख

- पौराणिक कथाओं में... दिनेश दर्पण ०८

कविता

- रंग फागुनी छाया – डॉ. देशबंधु शाहजहाँपुरी ११
- होली – रामगोपाल 'राही' १५
- होली आई – डॉ. विनोदचन्द्र पाण्डेय २४
- हमारी नानी जी – राजनारायण चौधरी २५
- धैर्य – डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी २५
- रंगों की दूकान है होली – कलीम आनंद २८
- बसंत न जाएगा – राममोहन शर्मा 'मोहन' ३२
- बौर – शिवचरण सिंह चौहान ३८
- त्योहार अनोखा – गोविन्द भारद्वाज ३८
- दीना की निडरता – डॉ. वेदमित्र शुक्ला 'मंयक' ४०
- गिनती – लक्ष्मीनारायण भाला ४२
- हम तो गाते फाग – मालती शर्मा 'गोपिका' ४९
- जय जय माँ... – डॉ. मुद्गला सिन्हा ५१

प्रेरक प्रंसग

- ऊँचा आसन – डॉ. श्याम मनोहर व्यास ३०
- मानवता की सीख – सचिन घोड़गांवकर ५०

स्तंभ

- हमारे राज्य पुष्प – १३
- जीवन शैली – ३६
- पुस्तक परिचय – ४१

विविध

- शब्द क्रीड़ा – १०
- फाग पहेली – १४
- देवपुत्र प्रश्नमंच – २९
- बूझो पहेली – ३०

चित्रकथा

- रंगने की तरकीब देवांशु वत्स ३३

बाल लेखनी

- शब्द वेध पहेली – २२
- रंग – २८
- फूलों से – २८
- बदलाव – ४४

एवं ढेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री

विज्ञान कथा : राजीव सक्सेना

गायब हो गए रंग

होली का त्योहार करीब आ गया था।

हमेशा फेसबुक और वीडियो गेम से चिपके रहे वाले 'एलियन सोसाइटी' के सदस्यों में इस बार रंग खेलने को लेकर खास उत्साह था।

यूँ एलियन सोसाइटी के मोहल्ले में बीस–पच्चीस बच्चे शामिल थे लेकिन उनमें बस पाँच सात यानी प्रशान्त, वैभव, ईशान, धैर्य, सक्षम और अंकिता ही सबसे ज्यादा सक्रिय थे।

दरअसल, एलियन सोसाइटी एक तरह का विज्ञान क्लब था जिसे गोवर्धन कालोनी के बच्चों ने डॉ. बनर्जी जी की प्रेरणा पर बनाया था। विज्ञान पढ़ाने वाले डॉ. बनर्जी बच्चों को विज्ञान की नई और रोचक जानकरियाँ देते थे तथा साथ ही बच्चों को विज्ञान से जुड़ने, नए–नए मॉडल बनाने, रोचक विज्ञान पत्रिकाएं पढ़ने, विज्ञान फिल्में देखने और वाद–विवाद प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिए लगातार प्रेरित करते रहते थे।

एलियन सोसाइटी के सदस्य नए जमाने के बच्चे थे। वैज्ञानिक जानकारियाँ जुटाने के अलावा इनमें सुदूर अंतरिक्ष में रहने वाले एलियनों के बारे में जानने समझने

की बड़ी उत्सुकता थी। बनर्जी जब धरती पर विचित्र अंतरिक्ष यानों के दिखाई पड़ने और एलियनों द्वारा मानवों के अपहरण की सच्ची घटनाएँ रोचक शैली में सुनाते तो बच्चे कल्पनाओं के विचित्र लोक में डूबने उतरने लगते। वे हर समय एलियनों के बारे में सोचते रहते। कुछ ने तो माँ–पिताजी के साथ जाकर बाजार से एलियनों जैसी विचित्र पोशाकें भी खरीद ली थीं और विद्यालय की परिधान प्रतियोगिता में पुरस्कार भी प्राप्त किए थे। सच्ची बात तो यह है कि एलियन गोवर्धन कालोनी के बच्चों की सोच पर बुरी तरह हावी हो गए थे। शायद यूँ ही बच्चों ने 'एलियन सोसाइटी' जैसा विज्ञान क्लब भी बना लिया था और डॉ. बनर्जी के घर पर इसकी नियमित रूप से बैठक भी होती रहती थी।

होली करीब आई तो बनर्जी ने बच्चों को समझाते हुए कहा–''बच्चो! होली पर बस अच्छे हर्बल रंगों का इस्तेमाल ही करना और किसी की इच्छा विरुद्ध मत मनाना। उस पर रंग नहीं डालना। भाईचारे के साथ त्योहार मनाना।''

''हर्बल रंग? ये हर्बल रंग क्या होते हैं?'' एलियन सोसाइटी के सदस्यों ने एक स्वर में पूछा।

''जो रंग प्राकृतिक वनस्पतियों यानी पेड़–पौधों से बनाए जाते हैं उन्हें हर्बल रंग कहते हैं। हर्बल रंग हमारी त्वचा को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते जबकि बाजार में मिलने वाले कृत्रिम रंगों में घातक रसायन मिले होते हैं जो हमारी त्वचा और आंखों को नुकसान पहुँचाते हैं। अच्छा होगा कि आप सभी होली पर टेसू के फूल उबालकर उनके रंग का ही होली खेलने के लिए उपयोग करें। टेसू का रंग हमारी परम्परा में हैं। पुराने समय से ही हमारे देश में होली खेलने के लिए टेसू के रंग का उपयोग होता रहा है।'' डॉ. बनर्जी ने कहा तो एलियन सोसाइटी के सदस्य बगलें झांकने लगे। वे सोच रहे थे– ''हमेशा विज्ञान, तकनीक और नए जमाने की बात करने वाले डॉ. बनर्जी आज अचानक यह पुरातनपंथी बातें क्यों कर रहे हैं?''

बात आई गई हो गई। एलियन सोसाइटी के सदस्यों ने डॉ. बनर्जी की बात पर कोई खास ध्यान नहीं दिया।

होली करीब आई तो वे फेसबुक पर आपस में चैंटिग करने लगे। वैभव ने सभी साथियों को संदेश भेजा– ''इस बार मैं रंग खेलने की जोरदार तैयारियाँ कर रहा हूँ। पिताजी के साथ मैं खूब पक्का गुलाबी रंग खरीदकर लाया हूँ जो हफ्तों तक चेहरे से नहीं हटेगा।''

''यह संकेत होली पर रंगों से बहुत बचता है। इस बार तो मैं उसे सिर से पैर तक रंगों से खूब सराबोर कर दूँगा।'' धैर्य ने कहा।

''हाँ, मैं भी संकेत पर रंग डालूँगा। पिछली बार उसने जबरदस्ती मेरे चेहरे पर ढ़ेर सारा गाढ़ा हरा रंग डाला था। देर तक मेरे चेहरे और आँखों में जलन होती रही थी। मुझे उससे पुराना हिसाब चुकाना है। संकेत पर रंग डालने में मैं भी तुम्हारी मदद करूंगा धैर्य!'' इस बार प्रशांत ने चैटिंग करते हुए कहा।

''मैंने तो अपनी भाभी के लिए पहले ही गाढ़ा काला रंग खरीद लिया है।'' अंकित ने चैटिंग करते हुए कहा।

''तुम लोग चाहे जो करो। मैं तो बस टेसू के फूलों का रंग ही सब पर डालूंगा।'' ईशान ने कहा।

''रहे फिसड्डी के फिसड्डी। भला टेसू का रंग भी अब कोई डालता है।'' अंकित ने जवाब दिया।

''लेकिन डॉ. बनर्जी ने तो टेसू का रंग ही उपयोग में लाने की सलाह दी है।''

''डॉ. बनर्जी जी तो लगता है अब पुराणपंथी हो गए हैं। टेसू का रंग भी भला कोई रंग होता है। डालने के कुछ ही देर बाद उड़कर गायब हो जाता है।'' अंकिता ने फिर कहा।

एलियन सोसाइटी के बच्चों ने श्रीमान बनर्जी की बात को नजर अंदाज कर अपने ढंग से होली मनाने की तैयारियाँ शुरु कर दी। उन्होंने होली पर बाजार से खरीदे घातक रसायनों वाले गाढ़े रंग घोलकर तैयार कर लिए। रंग वाले दिन एलियन सोसाइटी के बच्चों ने अपनी पिचकारियों को भरना शुरु कर दिया।

यह क्या!!

ज्योंही वैभव ने अपनी पिचकारी को गाढ़े गुलाबी रंग से भरी बाल्टी में डुबोया रंग एकाएक गायब हो गया। बाल्टी रंग की जगह अब केवल साफ पानी ही मौजूद था।

वैभव आँखें फाड़–फाड़कर बाल्टी देखने लगा। सोचने लगा– ''यह क्या चमत्कार है? एकाएक बाल्टी का रंग कहाँ गायब हो गया?''

कुछ ऐसा ही एलियन सोसाइटी के दूसरे सदस्यों के साथ भी हुआ। बड़ी नाँद में धैर्य द्वारा घोला रंग भी पिचकारी की नोक छूते ही उड़ गया। अपनी भाभी के लगाने के लिए अंकिता द्वारा तैयार किया गया गाढ़ा काला रंग ग्लिसरीन जैसे रंगहीन पदार्थ में बदल गया।

एलियन सोसाइटी के सदस्य परेशान थे। होली पर रंग खेलने का सारा मजा ही किरकिरा हो गया था। भला रंगों के बिना कैसी होली?

एलियन सोसाइटी के सदस्य सोचने लगे– 'कहीं यह किसी की शरारत तो नहीं है?'

वे अभी यह सोच ही रहे थे कि उनके मस्तिष्क में एक विचित्र संदेश गूँजा– ''तुम्हारे रंग हम एलियनों ने गायब किए हैं। दरअसल, जब तुम रंगों के बारे में बात कर रहे थे तब हमारा शिप धरती के करीब होकर गुजर रहा था। हमने तुम्हारी बातचीत सुन ली थी और तभी तुम्हारे रंग गायब करने का निर्णय कर लिया....''

''लेकिन हमारे रंग गायब करने से क्या होगा?'' एलियन सोसाइटी के सदस्यों ने मन ही मन कहा।

''हम तुम्हें सबक सिखाना चाहते थे। दरअसल, तुम नहीं जानते कि रंग दुनिया के लिए कितने जरूरी हैं। इनके बिना यह दुनिया कितनी फीकी और नीरस लगेगी? जरा सोचो, अगर तुम्हारी धरती पर गहरे नीले समुद्र, हरे–भरे पेड़, खेत और जंगल न हो, रंग–बिरंगे फूल और तितलियाँ व नीला आकाश न हो तो तुम्हें कैसा लगेगा? तुम मानवों की दुनिया इसलिए इतनी आकर्षक है कि इसमें अनगिनत रंग है। जरा हम एलियनों से पूछो जिनकी दुनिया में कोई रंग नहीं होते हैं और जिन्हें सारी दुनिया रंगहीन, पारदर्शी दिखाई पड़ती है। धरती के बच्चो! ध्यान रखना रंग तुम्हें खुशियाँ देते हैं। इनका उपयोग लोगों को खुशी देने के लिए होना चाहिए, किसी को दुःख देने या बदला लेने के लिए नहीं। यही पाठ सिखाने के लिए हमने तुम्हारे रंग गायब कर दिए हैं।'' बच्चों के मस्तिष्क में गूँजती किसी एलियन आवाज ने फिर कहा।

''लेकिन क्या हमारे रंग आप कभी वापस नहीं करोगे?'' एलियन सोसाइटी के सदस्यों ने पूछा।

''वापस कर देंगे। लेकिन पहले तुम्हें संकल्प लेना होगा कि होली के बहाने कभी रंगों का दुरुपयोग नहीं करोगे।''

''ठीक है हम संकल्प लेते हैं। अब हम होली पर केवल हर्बल या टेसू के रंगों का ही उपयोग करेंगे।'' एलियन सोसाइटी के सदस्यों ने संकल्प लिया।

बच्चे अपने खतरनाक रसायनों वाले रंगों को भूल ही गए। उन्होंने डॉ. बनर्जी की सलाह के अनुसार टेसू के फूलों से रंग तैयार किया। आश्चर्य की बात! इस बार उनका रंग गायब नहीं हुआ। बच्चों ने रंग घोलकर होली के उत्सव का खूब आनन्द लिया।

बाद में जब बच्चों ने अपने माँ–पिता को होली पर एलियनों द्वारा रंग गायब किए जाने की घटना के बारे में बताया तो उन्होंने कहा– ''यह सब तुम्हारा भ्रम है। तुम लोग हर समय एलियनों के बारे में सोचते रहते हो न। जरा सोचो, एलियन धरती के रंगों का क्या करेंगे?''

''हो सकता है वे भी हमारी तरह होली खेलते हों।'' ईशान ने कहा तो डॉ. बनर्जी जी भी रहस्यमय ढंग से मुस्करा दिए।

एलियन सोसाइटी के सदस्य सोच रहे थे– ''हो सकता है कि यह डॉ. बनर्जी की ही शरारत हो? लेकिन मस्तिष्क में गूँजता वह संदेश भला किसका हो सकता है?''

बच्चे यह रहस्य नहीं समझ पाए। बहरहाल, एलियनों के बहाने ही सही उन्हें एक अच्छा पाठ सीखने को मिल गया था।

• **मुरादाबाद (उ.प्र.)**

पौराणिक कथाओं में होली

आलेख : दिनेश दर्पण

होली का पर्व हमें उत्सव और आनन्द का अहसास कराता है, हम परम्परानुसार होली का त्योहार हर वर्ष बड़े ही हर्ष और उल्लास से मनाते हैं और 'होलिका' को फागुन माह की पूर्णिमा को जलाते चले आ रहे हैं। इससे जुड़ी भक्त प्रह्लाद की कहानी तो हम सब जानते हैं यह कथा बहुप्रचलित है पर इस पर्व से और भी कई कथाएँ जुड़ी हुई हैं जो हमें पुराणों में पढ़ने को मिलती हैं।

पौराणिक कथाओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध कहानी तो है भक्त प्रह्लाद की, जो हमें **नृसिंहपुराण** में पढ़ने को मिलती है। हिरण्यकश्यपु नाम का एक दैत्य था। उसने तपस्या करके ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त कर लिया था। उस वरदान के बल पर उसने सारी दुनिया को जीतकर देवताओं और ऋषि मुनियों को सताना शुरू कर दिया। दैत्यराज हिरण्यकश्यपु का पुत्र प्रहलाद भगवान विष्णु का परमभक्त था और हरि नाम का भजन कीर्तन किया करता था।

दैत्यराज हिरण्यकश्यपु ने अपने पुत्र पर अनेक अत्याचार किए ताकि वह भक्ति के मार्ग से हट जाए। लेकिन ऐसा हो नहीं सका पर भक्त प्रह्लाद भक्ति के मार्ग से पीछे न हटा। वह निरन्तर हरि स्मरण करता रहता था। इसी कथा के सिलसिले में **पद्मपुराण** में चिता जलाकर और **नारद पुराण** में प्रह्लाद की बुआ व हिरण्यकश्यपु की बहन होलिका द्वारा प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में बैठकर अग्नि स्नान करने का वर्णन है। होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि यदि वह चाहे तो रोज अग्नि स्नान करे तब भी वह नहीं जलेगी। लेकिन अपने भाई दैत्य हिरण्यकश्यपु की आज्ञा से जब विशाल जलती हुई चिता में प्रह्लाद को गोद में लेकर बैठी तो जलकर भस्म हो गई और भक्त प्रह्लाद सकुशल चिता से बाहर आ गया। यह देखकर हिरण्यकश्यपु आग–बबूला हो गया और जब उसने अपने पुत्र को जान से मारने के लिए अपनी

तलवार उठाई तो उसी समय भगवान विष्णु ने नृसिंह अवतार के रूप में प्रकट होकर अपने तीखे–तीखे नाखूनों से उसका पेट फाड़कर उसको मार डाला। तभी से दुष्ट दैत्य हिरण्यकश्यपु व होलिका की मृत्यु होने पर उसकी याद में होलिका दहन का पर्व सब दूर मनाया जाता है। पर समय अनुसार उसमें नवीनताएँ भी जुड़ती गईं।

होलिका दहन से जुड़ी दूसरी कहानी **भागवत पुराण** में हैं। द्वापर युग में मथुरा में कंस नाम का राजा था। उसने अपने भानजे बालक कृष्ण को जान से मारने के लिए पूतना नाम की एक राक्षसी को भेजा। पूतना अपना वेश बदलकर गोकुल में नंदराज के भवन में गई। इधर–उधर की बातें करते हुए उसने बालक कृष्ण को अपनी गोदी में लेकर खिलाने लगी। इधर–उधर उसने देखा और अपने जहर बुझे स्तन से बालक कृष्ण को दूध पिलाने लगी। बालक कृष्ण उसके मन के भाव को समझ गए। कृष्ण ने उसके स्तन का पूरा दूध पीने के बाद भी उसके स्तन को नहीं छोड़ा तो इससे पूतना को भयंकर पीड़ा होने लगी और वह दर्द से छटपटाने लगी और अपने असली राक्षसी के रूप में दिखाई देने लगी और थोड़ी ही देर बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु होने पर गोकुलवासियों को बहुत अधिक खुशी हुई। उन लोगों ने सब लोगों को इकट्ठा करके रात में पूतना के शव को जला दिया और इसी की याद में हर वर्ष होली जलाई जाने लगी।

होलिका दहन से जुड़ी तीसरी कथा **शिवपुराण** में है जो कामदेव के भस्म होने के संबंध में है। प्राचीनकाल में देव–दानव युद्ध में ताड़कासुर ने देवताओं को युद्ध में हरा दिया था। तब अनेक ऋषि मुनियों और विद्वानों ने देवताओं को सुझाव दिया कि यदि भगवान शंकर का कोई पुत्र हो तो वह इन असुरों को मार सकता है। लेकिन उस समय भगवान शंकर कैलाश पर्वत पर समाधि में लीन होकर तपस्या कर रहे थे। उनकी तपस्या को भंग करने के लिए इन्द्र ने कामदेव को भेजा ताकि भगवान

शंकर तपस्या से विमुख होकर गृहस्थी की ओर ध्यान देने लगें। फाल्गुन माह की शुक्ल पूर्णिमा को कामदेव और बसंत उनकी सुन्दर अप्सराओं को साथ लेकर भगवान शंकर के सामने जा पहुँचे। वहाँ उसने तपस्यारत भगवान शंकर पर अपने काम बाण चलाए इससे उनकी तपस्या में विघ्न पैदा हुआ। क्रोधित होकर भगवान शंकर ने अपना तीसरा नेत्र खोल दिया। जिसकी प्रचंड़ आग से कामदेव जलकर भस्म हो गया। दक्षिण भारत में इसी कहानी को आधार मानकर मदन दहन के रूप में होली मनाते हैं।

होली जलाने से संबंधित एक अन्य कहानी में जो पुराण में वर्णित है कि वैदिककाल में एक होलिका नाम की राक्षसी की है। वह लोगों को बहुत सताती थी दिन पर दिन उसके अत्याचार बढ़ते चले गए। जब लोगों में उसके अत्याचार सहने की शक्ति समाप्त हो गई। तो एक दिन रात को लोगों ने उसे पकड़कर जिन्दा ही जला दिया। जिस दिन उसे जिन्दा जलाया गया था, उस दिन भी फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा थी। इस तरह होलिका दहन के पर्व से कई कथाएँ जुड़ी हैं।

• तराना (म.प्र.)

शब्दक्रीडा (१६)

हमारे लोक नृत्य

बच्चो! जब हम आनंद की चरम अवस्था में होते हैं तो नाचने लगते हैं। नृत्य संगीत की शास्त्रीय परम्परा में तो है हीं लोकनृत्य के रूप में आम लोगों में भी प्रचलित है। भारत का लोक, अत्यंत समृद्ध है कला, साहित्य और संस्कृति से। शब्दक्रीड़ा में इस बार आपको खोजना है अलग-अलग प्रांतों के प्रसिद्ध लोक नृत्य। सरलता के लिए केवल आठ राज्यों के लोकनृत्यों के नाम यहाँ सम्मिलित किए जा रहे हैं। साथ ही उन प्रांतों के नाम भी हैं। आठों सही जोड़ी बनाने वाला उत्तम पांच, जोड़ियां बनाने वाला मध्यम और तीन जोड़ियां बनाने वाला सामान्य बुद्धि माना जाएगा।

रा	सा	बी	आ	य	रा	गि	हो	ला
ज	स	ला	ल	सा	घू	म	व	धू
त	रा	ज	गु	प्र	म	णी	मे	त
क	व	गि	म	हा	र	घा	घा	मा
र्ना	द्धा	णी	रा	हू	ल	य	ल	मे
ट	घा	ष्ट्र	गु	ज	बा	क्ष	य	ला
क	क्ष	हो	बी	न	स्था	गा	द्धा	र
क	र	ग	मे	हू	ग	न	क	पं
उ	त्त	र	प्र	दे	श	रा	जा	य
ल	ज	बा	ट	र्ना	गु	ब	स	घा

(सही उत्तर इसी अंक में)

क्या आप जानते हैं?

- इन प्रान्तों के कुछ अन्य लोक नृत्यों के नाम क्या है?
- बाँस नृत्य किन दो प्रांतों की विशेषता है?
- क्या आपने कभी अपने प्रांत के लोक नृत्य पर थिरकने का प्रयत्न किया है?

कविता : डॉ. देशबंधु 'शाहजहाँपुरी'

रंग फागुनी छाया है

लगी झूमने फिर खेतों में,
सरसों पीली पीली
फूलों संग बतियाती फिरती,
तितली रंग रंगीली।।
मस्त पवन के संग में फिर से,
झूम उठी हरियाली।

पीपल के पत्तों ने मिलकर,
खूब बजायी ताली।।
कोयल की कूँ-कूँ भी कितने,
मधुरिम गीत सुनाती।
पुष्पों के चेहरों पर अद्भुत,
मुस्काहट खिल जाती।।
बगिया में गेंदा, गुलाब संग,
कई पुष्प मुस्काते।
मतवाले भँवरे गुंजन कर,
गीत फागुनी गाते।।
यह सब देख धरा पर लगता,
स्वर्ग उतर आया है।
फागुन के मौसम का चहुँदिश,
रंग फागुनी छाया है।।

● शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

होली का खेल

कहानी : बिलास बिहारी

शहर के चौराहों पर होलिका दहन के लिए लकड़ियाँ जमा होने लगीं। कुछ माँगकर और कुछ चोरी–चुपके। कुछ लोग रात के अंधेरे में चौकी, बैंच और कुर्सियाँ दरवाजे पर से छिपाकर ले भागते। जिनकी चीजें चोरी जाती वे परेशान होते लेकिन लोग ले जाते वे खुशियाँ मनाते।

राघव की भी इच्छा होती थी कि वह भी लकड़ियाँ जमा करके होली जलावे। होली में जली आग की लपटें देखने में बड़ा मजा आता था। राघव अपने साथियों के साथ हर चौक पर जाकर यह दृश्य देख आता लेकिन खुद आग के साथ खेलने का मजा ही कुछ अलग है जो सयाने लोगों के चलते नहीं मिल पाता था। सयाने लोग बच्चों को आग के पास फटकने तक न देते थे।

इस बार की होली में राघव ने अपने मन में अलग से होलिका जलाना तय कर लिया। विद्यालय से आते ही उसने अपने मोहल्ले के साथियों से परामर्श किया। उसके साथी भला कब पीछे हटने वाले थे? अपने ही मोहल्ले के नुक्कड़ को उन लोगों ने होलिका दहन की जगह बनाई।

राघव ने अपने साथियों को आगाह कर दिया था कि कोई चोरी से किसी का सामान, लकड़ी आदि नहीं उठाएगा। जो कुछ स्वेच्छा से मिले उसी पर वे संतोष कर लेंगे।

राघव की छोटी बहन मुन्नी ने उसके काम में बहुत मदद की। वह घर–घर जाकर लोगों से फालतू लकड़ियाँ और बाँस के टुकड़े आदि माँग लाई। होली के दिन हर घर से पुए और ठेकुए भी मिले। सब इंतजाम हो गया। राघव और उसके साथी सभी खुश थे। मुन्नी अपनी सहेलियों के साथ उछल कूद कर रही थी। सभी इसी इंतजार में थे कि कब लकड़ियों के ढेर में आग लगे और वे एक साथ आग में पुए फेंकते जाएँ।

हर चौक पर आग की लपटें और धुएँ दिखाई देने लगे। सारा शहर रोशनी और लाल धुएँ से भर गया था। राघव के साथियों ने राघव को उकसाया। राघव के सिवा वहाँ था ही कौन जो होलिका में आग फूँके। सभी बड़े लोग होलिका दहन देखने बड़े चौक पर चले गए थे।

राघव ने लकड़ियों में आग लगा दी। फागुन की हल्की हवा चल रही थी। देखते ही देखते आग की

लपटें उठने लगीं। बच्चे किलकारियाँ मारने लगे। मुन्नी अपनी सहेलियों के साथ आग के चारों और दौड़ लगा रही थी कि अचानक राघव ने मुन्नी की चीख सुनी। उसे लगा, शायद मुन्नी के पैर में कोई कांटा चुभ गया है। लेकिन यह क्या? मुन्नी के फ्राक में आग लगी है। बाप रे बाप। अब क्या होगा?

सभी बच्चे आग के पास उछल–कूद रहे थे। किसी को किसी की सुध नहीं थीं। राघव के तो होश उड़ गए। उसकी इच्छा हुई कि वह लोगों को पुकार–पुकार कर मुन्नी की मदद के लिए बुलाए लेकिन उसको तो जैसे साँप सूंघ गया। उसकी बोलती बंद हो गई और उधर मुन्नी चीखे जा रही थी।

अचानक वह चिल्लाकर दौड़ा– ''मुन्नी तू वहीं बैठ जा, जरा भी हिलना नहीं।''

राघव की आवाज सुनकर सभी बच्चे सहम गए। उन्होंने जब मुन्नी के कपड़ों पर आग देखी तब वे एक–एक कर भाग खड़े हुए। अब तो वहाँ एक तरफ होलिका जल रही थी और दूसरी तरफ मुन्नी। राघव के सिवा वहाँ कोई नहीं था। उसे जोर का गुस्सा आया, वह बुदबुदाया कैसे हैं ये मित्र संकट के समय मदद करने की बजाय ये भाग रहे हैं। लानत है उन पर। ''वह रोने–रोने को हो गया लेकिन सोचने का समय नहीं था।

उसने मुन्नी के कपड़ों की आग अपने हाथों से बुझाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह असफल रहा। तभी उसे एक विचार सूझा। घर से निकलते समय वह अपना तौलिया साथ लाया था जो उसकी कमर में लपेटा हुआ था। झटपट उसने कमर से तौलिया खोला और पास के नल से भिगो लाया। फिर उसने मुन्नी के जलते कपड़ों पर तौलिए का सारा पानी निचोड़ कर भीगे तौलिए को मुन्नी के बदन पर लपेट दिया। आग तत्क्षण बुझ गई।

तब तक लोग जमा हो चुके थे। मुन्नी को तुरंत अस्पताल ले जाया गया। वह बच गई। उसके शरीर का जला दाग भी उपचार के बाद छूट गया। उसी होली से राघव बहुत सावधान हो गया है। उसने उस दिन कसम खाई– होली में वह धूल–कीचड़ नहीं उछालेगा। होली के दिन सिर्फ आसानी से छूटने वाले रंगों का ही प्रयोग करेगा और होलिका दहन बड़ों की उपस्थिति के बिना अकेले बच्चों के साथ नहीं होगा।

• पटना (बिहार)

फाग पहेली

घिरे फाग में आज कृष्ण हैं रंगों की बौछार पड़ी
जरा खोज कर देखो किससे किसकी लम्बी धार बड़ी

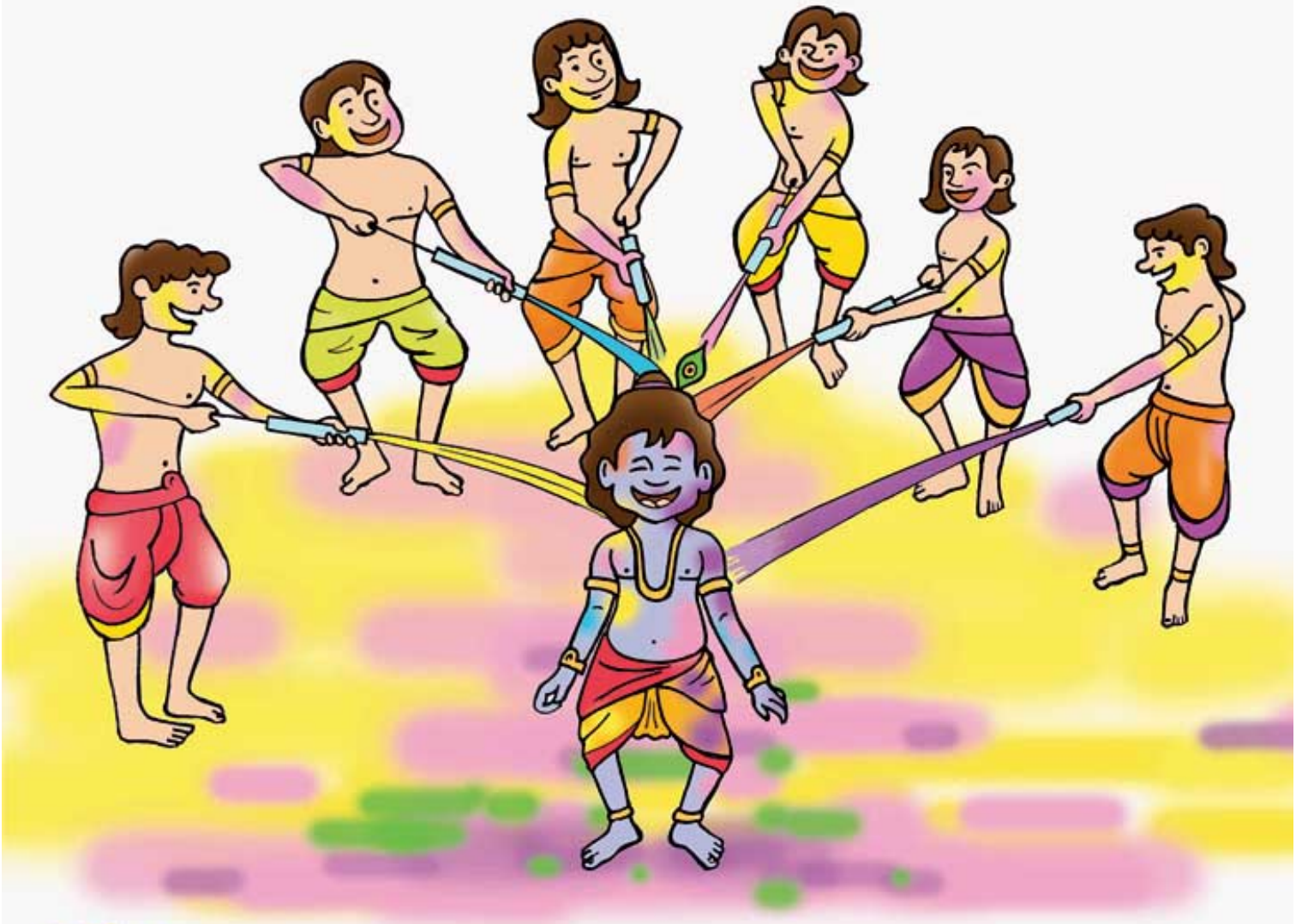

(उत्तर स्वयं खोजें)

कविता : रामगोपाल 'राही'

होली

रंग गुलाल लगाती होली
लाल गाल करवाती होली
चेहरे रंग रंगीले कपड़े,
भेष अजब बनवाती होली।।
लगा ठहाके करे ठिठोली,
हँसना खूब सिखाती होली।
लगते कड़वे बोल भी प्यारे-
हुड़दंग खूब मचाती होली।।
रंगों की बौछार है होली
मन में उमड़ा प्यार है होली।
गले मिलाती यह आपस में,
सच प्यारा त्यौहार है होली।।
नाचे गावें सब मस्ती में,
सब पर रंग जमाती होली।
हृदय तरंगें उठे उमंगें,
सब के मन को भाती होली।
घर-घर देखो घूम रही है
गाती चंग बजाती टोली।
लगा गुलाल प्रेम से कहते
बुरा ना मानो आज है होली।।

● लाखेरी (राज.)

होली का त्योहार भला

कहानी : डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष'

अंकित सुबह जागा तो चारों और शोरगुल देखकर बहुत चक्कर में पड़ गया। वैसे पिछले कई दिनों से वह आस–पड़ौस और गली मुहल्लों में कुछ परिवर्तन देख रहा था, लेकिन इस ओर उसका ध्यान ही नहीं गया। उसकी उम्र अभी कम है लेकिन पढ़ाई की ओर उसका ध्यान अधिक जाता है। शाम को थोड़ी देर खेलने में लगाता है। इसमें भी विशेष बात यह है कि उसका मन बाबाजी के साथ अधिक लगता है। उसके बाबा अपने पढ़ने–लिखने के समय से समय निकालकर अंकित से बहुत अच्छी बातें करते हैं और खेलते भी हैं। उसे लगता है कि बाबा स्वयं बच्चे हैं। वह बाबा से प्रश्न करता रहता है और बहुत अच्छे उत्तर पाता है।

आस–पड़ोस का यह परिवर्तन, हल्ला–गुल्ला, गीत–संगीत, रंग–गुलाल उसे बहुत प्रभावित कर रहा था। बाबा से प्रश्न करने पर उसे पता चला कि यह तो पूरे देश का एक प्रसिद्ध और बहुत पुराना त्योहार है। इस पर्व का नाम होली है। यह प्रतिवर्ष फागुन के महीने में शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाता है। अंकित कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष और देशी तिथियों को जानता ही नहीं। यह बाबा से अनेक प्रश्न करता गया तो उसकी समझ में बहुत कुछ आया। उसका ध्यान अपने देश और समाज की ओर अधिक जाने लगा। उसका निवास शहरी और गांव के मिले–जुले क्षेत्र में है लेकिन बाबा ने बताया कि वे तो पूरी तरह के ग्रामीण क्षेत्र में ही रहे हैं।

अंकित अपने तीन–चार मित्रों को बुलाकर बाबा के पास ले आया। उसे बाबा की बातें बहुत अच्छी लग रही थीं। इसलिए वह अपने देश और राष्ट्र को समझने तथा उसके त्योहार को जानने का अधिक इच्छुक हो गया। साथियों के साथ उसका मन इस ओर और अधिक हो गया। उसने अपने बाबा से कहा कि वे हम सभी बच्चों को इस समय होली के विषय में अधिक बताएँ। उसने कहा कि हम अन्य पर्वों के विषय में बाद में प्रश्न करके पूछेंगे।

अंकित के बाबा ने बच्चों को एक बड़ी रोचक कहानी सुनाई। उन्होनें कहा कि हिरण्यकश्यपु नाम का एक राक्षस राजा था। वह राक्षस भगवान विष्णु का विरोधी तथा शत्रु था लेकिन इसका पुत्र प्रह्लाद बचपन से ही ईश्वर का भक्त था। वह भगवान विष्णु की प्रार्थना में पूरा मन लगाता था। राक्षस ने उसे इससे रोका लेकिन वह तो बड़े मन से ईश्वर की प्रार्थना में निरंतर लगा रहा। राक्षस बड़ा दुष्ट था। वह अपने पुत्र को समझ भी न पाया और तरह–तरह से उसे मार डालने का प्रयत्न करने लगा।

प्रभु की कृपा से प्रह्लाद पर कोई प्रभाव न पड़ा। ईश्वर ने उसकी लगातार रक्षा की। उसकी होलिका नाम की एक बुआ थी। उसे आग में कभी न जलने का वरदान मिला हुआ था। राक्षस ने सोचा कि मैं प्रह्लाद को होलिका की गोद में बैठाकर कूड़े–कचड़े और लकड़ियों के ढेर में बैठा दूँ। ढेर में आग लगाने पर मेरी बहिन होलिका जलेगी नहीं और यह प्रह्लाद अवश्य जल जाएगा लेकिन हुआ इसका उलटा। लकड़ी के ढ़ेर में आग लगाने पर ईश्वर की कृपा से प्रह्लाद पूरी तरह सुरक्षित रहा और होलिका जलकर राख हो गई।

अंकित के बाबा ने बताया कि पापी अपने पापों के कारण नष्ट होते हैं और पुण्य करने वालों को कभी दुःख नहीं होता। पुराणों में प्रह्लाद, हिरणकश्यपु और होलिका की यह कहानी है। राक्षस के पापों के कारण प्रभु ने उसे भी नष्ट किया। इसी कहानी के आधार पर भारतवर्ष में बहुत प्राचीन काल से होली पर्व या होलिका उत्सव मनाया जाता है।

होली की यह कहानी सुनकर अंकित और उसके मित्र रोहित,

राहुल, रघु और रंजन बहुत उमंग में आ गए। उन्हें शिक्षा मिली। सभी बच्चों ने होली पर्व के विषय में अलग-अलग अनेक प्रश्न किए। बाबा ने भी अच्छी तरह ध्यान देकर होली-पर्व के लाभ बताए। उन्होंने कहा कि होली का त्यौहार सभी के मिलने-जुलने का पर्व है। इस समय सभी लोग पुराने बैर-भावों को भुला देते हैं। वे चंदन और रंग-गुलाल लगाकर ढोल मंजीरे बजाते हैं तथा होली के गीत गाते हैं। वे एक दूसरे के गले मिलते हैं और प्रेमभाव बढ़ाते हैं। सभी लोग आपस में मिल-बैठकर एक दूसरे का सत्कार करते हैं और तरह-तरह के स्वादिष्ट खाद्यान्न तथा मिष्ठान खाते और खिलाते हैं। नर-नारी और बच्चे टोलियाँ बनाकर दूर-दूर तक घूमकर सभी को अच्छाइयों की ओर आकर्षित करते हैं।

जिनका ध्यान होली पर्व के मूल कारण की ओर नहीं है वे गलती कर देते हैं। वे होली-पर्व की खुशियों में और उसे मनाने में दोष ले आते हैं। बुद्धिमान लोग दोषों को दूर करना अपना धर्म और कर्तव्य मानते हैं। आपस में लड़ाई-झगड़ा करना, रंग-अबीर, चंदन और गुलाल की जगह धूल-मिट्टी, कीचड़ और गंदे पानी का प्रयोग करना वे समाज में सभी को समझा-बुझाकर दूर कर देते हैं। वे लकड़ी के साथ टूटा-फूटा व्यर्थ का काठ-कबाड़ जला देते हैं। रबी की फसल के अन्न को भूनकर उसका स्वागत किया जाता है तथा जगह-जगह आग जलाकर वायुमंडल को शुद्ध किया जाता है।

बाबाजी की इन अच्छी बातों को सुनकर सभी बच्चों में उत्साह जाग पड़ा। राहुल नाम का छोटा बालक सबसे पहले अधिक उमंग में आ गया। वह खड़ा हो गया और बाबा से बोल पड़ा। उसने कहा कि बाबा! मैं अपने इन सभी मित्रों के साथ दूर-दूर तक होली का त्योहार देखूँगा। दोषों को दूर करने का प्रयत्न हम सभी एक साथ मिलकर अवश्य करेंगे। हम सभी छोटे हैं। पिछले वर्षों में हमारा ध्यान इस ओर नहीं गया। आपने यह बहुत अच्छा कार्य किया है कि हमें होली के उत्सव की सच्चाई को बताकर सोते से जगा दिया है। हम सब भाई आपको धन्यवाद देते हैं।

रोहित, रघु और रंजन एक-एक करके अपने आप अपनी बात बाबा से कहने लगे। बाबा ने देखा कि अंकित तो पूरी तरह ध्यानमग्न हो गया है। वह बिल्कुल शांत है और गहरे चिंतन में डूबा हुआ है। बाबा ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर कहा कि-''बेटा! तुम कहाँ खो गए हो? वह सचेत होकर तुरंत उठा और बोला-''बाबाजी! आपको बहुत-बहुत बधाइयाँ! मुझे आपकी बातें बहुत उपयोगी लगी हैं। मैं गहराई में जाकर यह सोच रहा था कि हमारे समाज में बहुत विद्वान और महान व्यक्ति हुए हैं। वे आने वाली पीढ़ियों को तरह-तरह से जगाने और सचेत करने के रास्ते बना गए हैं। होली के विषय में कहानी सुनाकर आपने हम सभी भाइयों को उन्नति का मार्ग बता दिया है।

अंकित अपने दोनों हाथों को उठाकर कहने लगा-''बाबाजी! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं समाज के दोषों को दूर करूंगा, उसे सद्गुणों से भरूंगा और उन्नति की ओर बढ़ाऊँगा। मैं आपको स्वयं अपनी उन्नति करके ऊँचा उठकर दिखाऊँगा।

अंकित की यह बात सुनकर सभी बालक प्रफुल्लित हो उठे और बोले-''बाबाजी! हम सभी प्रण करते हैं। अपनी और समाज की उन्नति हम आपको अवश्य दिखाएंगे। बाबा ने बच्चों को प्यार दिया, पुचकारा और होली के पर्व को देखने के लिए जाने को कहा।

• आगरा (उ.प्र.)

बदलाव के लिए

हास्य नाटक : कुसुम अग्रवाल

पात्र

रामू - (नौकर)
सुधीर - (मालिक)
सुधा - (मालकिन)
श्रेया व सागर - (दो बच्चे)

दृश्य प्रथम

(घर की बैठक। मालकिन व रामू कमरे में खड़े हैं तथा मिलकर कमरे की साज सज्जा कर रहे हैं।)

सुधा– रामू, जाकर भण्डार में से क्रीम रंग वाली पर्दों की जोड़ी ले आओ। आज बैठक के पर्दे भी बदलने पड़ेंगे। बहुत दिन हो गए हैं ये गहरे रंग के पर्दे लगाए हुए, इन्हे हटा देते हैं।

रामू – परन्तु मालकिन ये पर्दे तो बहुत सुन्दर हैं, अधिक मैले भी नहीं हुए है। देखो ये कमरे की दीवारों व सोफे आदि से कितना बढ़िया मेल बनाए हुए हैं, आप इन्हें क्यों बदलना चाहती हैं?

सुधा –रामू! तुम बहुत भोले हो, तुम नहीं समझोगे। बदलाव के लिए। बदलाव यानि परिवर्तन हमारे जीवन में बहुत आवश्यक है। बदलाव के बिना जीवन नीरस हो जाता है। बहुत दिन हो गए हैं हम ये पर्दे देख–देखकर ऊब गए हैं और ये कमरा निर्जीव है तो क्या हुआ, यह भी एक ही तरह के पर्दो से ऊब गया होगा। सबको बदलाव चाहिए।

रामू– मालकिन! बदलाव के और क्या–क्या लाभ हैं?

सुधा– बहुत से लाभ हैं, तुम्हें पता है ये बदलाव तन,मन दोनों के लिए लाभदायक होता है। तरह–तरह की सज्जा करने से हमारी आर्थिक सम्पन्नता भी झलकती है। वरना क्या कहेंगे लोग ओहो! इनके पास तो एक जोड़ी परदे ही हैं। इतनी कमाई है पर हैं कंजूस के कंजूस ही।

रामू– हाँ मालकिन! मैं समझ गया और हाँ ये पर्दे भी एक ही जगह लटके–लटके ऊब गए होंगे इन्हें भी थोड़ा बदलाव व विश्राम मिल जाएगा।

सिर्फ बातों में समय बरबाद मत करो।

रामू – जी मालकिन! (बदलाव बहुत जरूरी है, परिवर्तन बहुत

जरूरी है, कहता–कहता पर्दे लाने के लिए चला जाता है।)

(दृश्य द्वितीय)

(सुबह के आठ बजे हैं। श्रेया व सागर विद्यालय के लिए तैयार हो रहे हैं।)

श्रेया– माँ जल्दी टिफिन दे दो, बस आने वाली है।

सुधा– अभी लाई, बस एक पराठा और सेकना बाकी है। सागर कहां है?

सागर – ये रहा मैं, बिल्कुल तैयार हूं, बस जूते पहनने बाकी हैं। माँ मेरा टिफिन भी दे दो।

(सुधा दोनों के टिफिन लेकर आती है।)

सुधा – ये लो टिफिन, अपने–अपने बस्ते में रख लो।

श्रेया– (रामू को आवाज लगाकर) रामू! ऊपर से कमरे से मेरा बस्ता ले आओ।

सागर – मेरा भी, जल्दी करो, हमे देर हो रही है।

रामू – (एक बस्ता श्रेया को देकर) ये लो बिटिया, तुम्हारा बस्ता।

(सागर और श्रेया बस्ता लेकर, अपने टिफिन रखने लगते हैं तो चौंकते हैं।)

सागर (रामू से)– ये क्या तुमने मुझे श्रेया का बस्ता क्यों दिया है। इसमें चौथी कक्षा की किताबें हैं। मैं तो आठवीं कक्षा में पढ़ता हूं, तुम्हें तो सब पता है ना?

श्रेया– और मुझे भैया का बस्ता क्यों दिया है? मैं इसका क्या करुंगी?

रामू – सिर्फ बदलाव के लिए। बदलाव बहुत जरूरी है जीवन में। तुम लोग ऊब गए होगे ना रोज एक ही कक्षा की किताबें पढ़ते–पढ़ते। इसलिए मैंने सोचा क्यों न आज बस्ता बदल दूं, तुम्हें मजा आ जाएगा और किताबों को भी बदलाव मिल जाएगा।

(सागर व श्रेया रामू को मारने दौड़ते हैं इतनी देर में बस का हार्न सुनाई देता है।)

(दृश्य तृतीय)

(सुबह के नौ बजे हैं। सुधीर कार्यालय जाने के लिए तैयार हो रहे हैं।)

सुधीर– सुधा जरा मेरे कपड़े तो निकाल दो।

सुधा– जी अभी लाती हूं। (कहकर एक जोड़ी कपड़े लेकर आती है।)

सुधीर– (कपड़े देखकर) ये क्या टी–शर्ट क्यों लाई हो। सुधा तुम्हें पता है ना कि मैं कार्यालय जाते समय पूरी बाहों की कमीज ही पहनता हूं। मुझे कार्यालय में टी–शर्ट पहनना पसंद नहीं हैं।

सुधा– ओ हो! कब समझोगे तुम, बदलाव के लिए। बदलाव जीवन में बहुत जरूरी है। रोज एक ही तरह के कपड़े पहनकर तुम ऊब नहीं जाते हो क्या?

सुधीर– नहीं, मुझे कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता।

सुधा– पर दूसरों को पड़ता है। वे क्या सोचते होंगे कितना ऊबाऊ आदमी है। रोज एक ही तरह से तैयार होकर आ जाता है। आज अपना स्टाइल बदलकर तो देखो कितनी तारीफ करते हैं लोग।

सुधीर– ओ हो! तुम भी पीछे ही पड़

गई। फिर जोर से चिल्लाकर) अरे रामू! मेरे जूते ले आओ।

(रामू का हाथ में एक जोड़ी जूते लेकर प्रवेश)

रामू– लीजिए साहब, जूते।

सुधीर – (जूते देखकर चौकता है।) ये क्या महिलाओं के जूते? ये पहनकर कार्यालय जाऊंगा मैं? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या?

रामू– मालिक बदलाव के लिए पहन लीजिए, बदलाव बहुत जरूरी है जीवन में। ऊब गए होंगे, आज बदलकर देखिए पैर भी खुश हो जाएंगे।

(सुधीर रामू को मारने दौड़ता है तथा रामू बचने के लिए भागता है।)

(दृश्य चतुर्थ)

(सुधा घर में है, तथा रामू बाजार जाने की तैयारी कर रहा है।)

सुधा– रामू! यह लो थैला और ये लो डिब्बा। थैले में ताजा ताजा सब्जियां ले आओ तथा इस डिब्बे में दो लीटर तेल। हाँ, पैसे ठीक देकर आना।

रामू – जी मालकिन!

सुधा – हाँ, और जल्दी आना। कहीं इधर–उधर बातों में मत उलझ जाना।

रामू – जी मालकिन! मैं यूं

ले लो रंग गुलाल ! भरे हुए हैं थाल !!

राजेश गुजर

होली के इन ९ रंगों के थालों को चार रेखाओं द्वारा आपस में मिलाना है लेकिन रेखा खींचते समय कलम नहीं उठाना है।

गया और यूं आया।

(रामू बाजार जाता है तथा सुधा अखबार पढ़ने बैठ जाती है। कुछ ही देर बाद रामू बाजार से लौट आता है।)

रामू – मालकिन मैं सामान ले आया।

सुधा – ठीक है, रख दो । फिर थैले की ओर देखकर) ये थैले में से क्या टपक रहा है।

रामू – (थैले को ध्यान से देखकर) शायद तेल है।

सुधा– क्या मतलब? थैले में तेल है?

रामू– हाँ और डिब्बे में सब्जियां। (कहकर डिब्बा दिखाता है जिसमें आलू, प्याज, करेले आदि हैं।)

सुधा– यह क्या बेवकूफी है? मैंने तुम्हे कहा था न कि डिब्बे में तेल लाना है और थैले में सब्जियाँ। हमेशा लाते हो ना तुम। फिर आज ये उलटा पुलटा क्या कर दिया।

रामू – बदलाव के लिए। मैंने सोचा कि ये सब्जियाँ रोज थैले में आती–आती ऊब गई होंगी और तेल डिब्बे में आते–आते। इसलिए आज मैंने उनका स्थान बदल दिया। अब ये दोनों खुश हैं।

(सुधा गुस्से में भरकर रामू को मारने दौड़ती है। रामू बचता है तथा एक स्थान पर खड़े होकर बोलता है।)

रामू – मालकिन, मुझे क्यों मारती हो। मैंने भी तो वही किया जो आप रोज कहती हो। बदलाव बहुत जरूरी है जीवन में।

सुधा– इस महामूर्ख को कौन समझाए कि बदलाव सही समय पर और सही चीज का ठीक रहता है। सिर्फ अंधाधुध चीजों के उलटफेर को बदलाव नहीं कहते।

(परदा गिरता है।)

●कांकरोली (छ.ग.)

जरा ध्यान से देखो बस अंतर ढूंढो पूरे दस

– सारंग क्षीरसागर

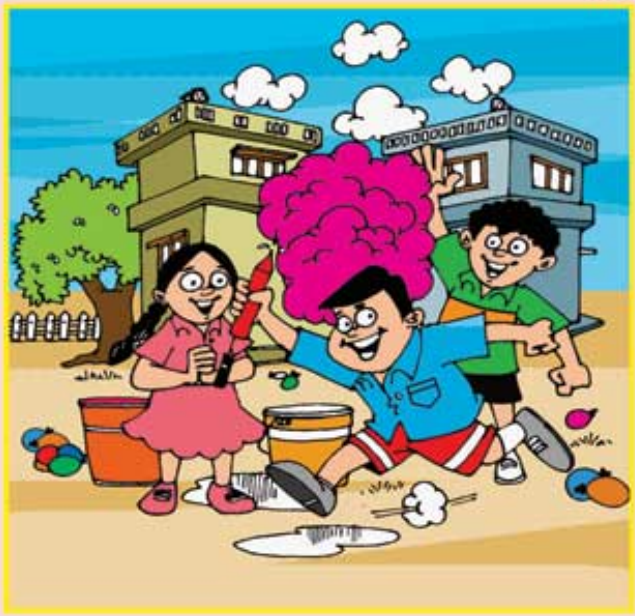

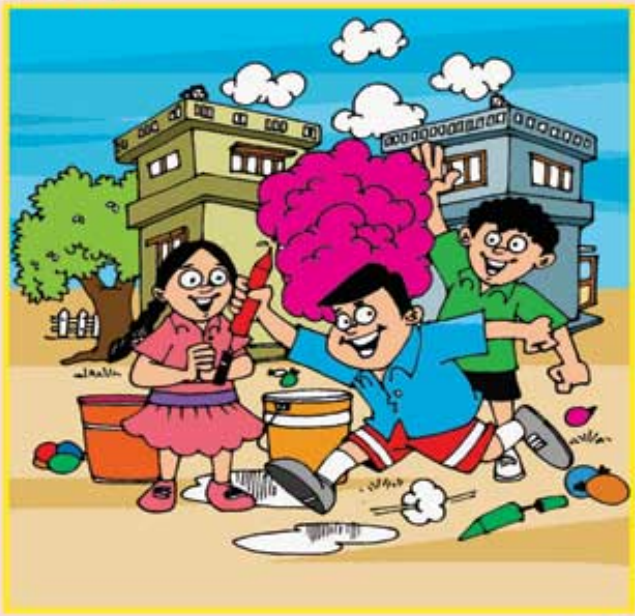

बाल लेखनी: पुलकित जैन

शब्द वेध पहेली

संकेत

बायें से दायें–

०१) जंगल का राजा (२)
०३) पंकज, जलज, नीरज (३)
०६) निवारण, सवाल का उत्तर (२)
०९) नासिका, सूंघने की इन्द्रिय (२)
११) जनता में एक, व्यक्ति, लोग (२)
१९) हीर, गिनती सूचक शब्द (२)
२१) राजा का घर, राजघर (३)
२४) पौधे उगाने का मिट्टी या सीमेंट का पात्र (३)
२८) इन्द्रियों का राजा (२)
३२) जो कभी नही मरे, देवता (३)
३५) मुस्लिम धर्म में एक पवित्र महिना (४)
४१) भिड़ाना (३)

ऊपर से नीचे–

०२) निवास करना, बसना (३)
०५) पूर्ण मन से कार्य करना या पूरी इच्छा से कार्य करना (३)
०७) जलाने का साधन, जलाऊ (३)
११) पानी, नीर (२)
१३) झूमना, रमना (३)
१७) यलगार, आक्रमण (३)
१८) मसलना, मालिश करवाना (३)
२०) नभ, आकाश (३)
२८) भारत के ऊपर से गुजरने वाली रेखा, मगर (३)
३०) बल, ताकत, शक्ति (२)
३२) आग, पावक, अग्नि (३)
३४) किसी वस्तु को संभालकर.....(३)
३६) राय, वोट, सिद्धांत (२)

१	२	■	३	४	५
■	६	७	■	■	८
■	९	१०	■	११	१२
१३	■	१४	■	१५	■
१६	■	■	१७	■	१८
१९	२०	■	२१	२२	२३
■	२४	२५	२६	■	२७
२८	२९	■	■	३०	■
३१	■	■	३२	३३	३४
३५	३६	३७	३८	■	३९
■	४०	■	४१	४२	४३

(उत्तर इसी अंक में)

• मल्हारगढ़ (म.प्र.)

हमारे राज्य पुष्प

झारखण्ड का राज्य पुष्प

पलाश

डॉ. परशुराम शुक्ल

मूल वृक्ष यह भारत का है,
ढाक, पलाश कहाता।
लंका, बर्मा और पाक में,
कहीं-कहीं मिल जाता।
सड़क किनारे मैदानों में,
जंगल तक से नाता।
दस मीटर की ऊँचाई तक,
अपना रूप बढ़ाता।
पतझड़ वाला वृक्ष निराला,
काम सभी के आता।
मानव इससे दोने पत्तल,
जमकर खूब बनाता।
ऋतु बसंत के आते ही यह,
अभिनव रूप दिखाता।
नारंगीपन लिए लाल से,
फूलों से भर जाता।
इसके फूलों से केशरिया,
बच्चे रंग बनाते।
होली के दिन डाल सभी पर,
मस्ती में इतराते।

• भोपाल (म.प्र.)

सही उत्तर

शब्द क्रीड़ा

हमारे लोक नृत्य

१. रास (उत्तर प्रदेश)
२. गरबा (गुजरात)
३. गिद्धा (पंजाब)
४. लावणी (महाराष्ट्र)
५. घूमर (राजस्थान)
६. यक्षगान (कर्नाटक)
७. लाहो (मेघालय)
८. बीहू (आसाम)

होली आई

कविता : डॉ. विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

होली आई, होली आई।
हुए भक्त प्रह्लाद धन्य हैं।
उनके कार्य सभी अनन्य हैं।।
नहीं ध्येय से डिगे कभी भी,
राह भक्ति की ही अपनाई।
होली आई, होली आई।।
हार हिरण्यकश्यपु ने मानी।
उसे मारने की थी ठानी।।
हुआ होलिका दहन आग में,
होली जाने लगी मनाई।
होली आई, होली आई।।

देते सबको सभी बधाई।
यह त्योहार बड़ा अलबेला।
लगता है खुशियों का मेला।।
सभी डालते रंग सभी पर,
देते सबको सभी बधाई।
होली आई, होली आई।।
लोग अबीर, गुलाल लगाते।
बड़े प्रेम से गुझिया खाते।।
खाते पूड़ी और कचौड़ी,
खाते हैं नमकीन मिठाई।
होली आई, होली आई।।

● लखनऊ (उ.प्र.)

कविता : राजनारायण चौधरी

हमारी नानी जी

जब-तब चूमें गाल हमारी नानी जी।
बोलें- आओ लाल, हमारी नानी जी।
देख जरा भी लें चेहरे पर घिरी उदासी,
खुशियां करें बहाल हमारी नानी जी।
कोई भी मेहमान हमारे घर जब आएं,
पूछें सबका हाल हमारी नानी जी।
सुन लें अदना सी भी कोई बात अगर
खींचे उसकी खाल हमारी नानी जी ।
बात-बात में अपने कई पुश्त पुरखों की
देती सदा मिसाल हमारी नानी जी।
रेवड़ियाँ, बर्फी हलवा भाये अति इनको
खाएं भर-भर गाल हमारी नानी जी।

● हाजीपुर (बिहार)

कविता : डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

धैर्य

चाहे जितने संकट आए,
कभी न उनसे घबराना।
विपदाएं चाहे हों जितनी,
आगे तुम बढ़ते जाना।।
संघर्षों को जो हंस काटे
वीर साहसी वह होता।
कष्टों में जो हार न माने
विजयी माला वही पहनता।।
भिड़ो निरन्तर कठिनाई से,
जब तक मन में है शक्ति।
निश्चित मंजिल पग चूमेगी,
हर क्षण प्रभु में हो भक्ति।।

● कानपुर (उ.प्र.)

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

मिलन संध्या

प्रतिवर्ष होली की मिलन संध्या पर उस कॉलोनी में कोई न कोई रंगारंग कार्यक्रम अवश्य होता था जिसकी प्रतीक्षा वहां के रहवासियों को आतुरता से रहती थी। इस बार लकी–ड्रा द्वारा पुरस्कार निकालने की खबर थी।

निर्धारित समय पर जब मोहल्ले के अधिकतम लोग एकत्र हो गए तो कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। कार्यक्रम के संयोजक मोहन भाई मौसम की मस्ती के अनुकूल अजीबो गरीब वेशभूषा में थे। उनके सिर पर कलगीनुमा टोपी खूब फब रही थी।

एक दरी बिछाकर उस पर ढेर सारी नाम लिखी पर्चियाँ रख दी गई थी। उन्हें अच्छी तरह मिलाया गया। फिर एक पालतू लंगूर को बुलवाकर उससे एक पर्ची उठवाई गई। मोहन भाई पर्ची खोलकर पढ़ा– ''हमारे आज के भाग्यशाली विजेता हैं माखनलाल जी। वे कृपया यहां पधारें।'' माखनलाल सकुचाते हुए मंच पर पहुंचे। मोहन भाई शुरु हो गए– ''बधाई हो माखन भाई! अब एक प्रश्न है आपके लिए। प्रश्न है...अपने दुश्मन का नाम बताइए।''

प्रश्न सुनकर माखनलाल दुविधा में दिखाई दिए। मोहन भाई ने स्पष्ट किया– ''दुश्मन या अपने विरोधी या फिर जिसे आप पसंद न करते हो उसका नाम बता दीजिए...हाँ वे होने इसी मोहल्ले के चाहिए।''

'' क्या करेंगे?'' – माखनलाल ने जानना चाहा। मोहन भाई मुस्कराते हुए बोले–''आप पहले बताइए तो सही... अभी थोड़ी देर में सब मालूम पड़ जाएगा।'' माखनलाल ने नाम बताया– ''बद्रीनारायण।''

''बद्री भाई हाजिर हो– ''नाटकीय ढंग से मोहन

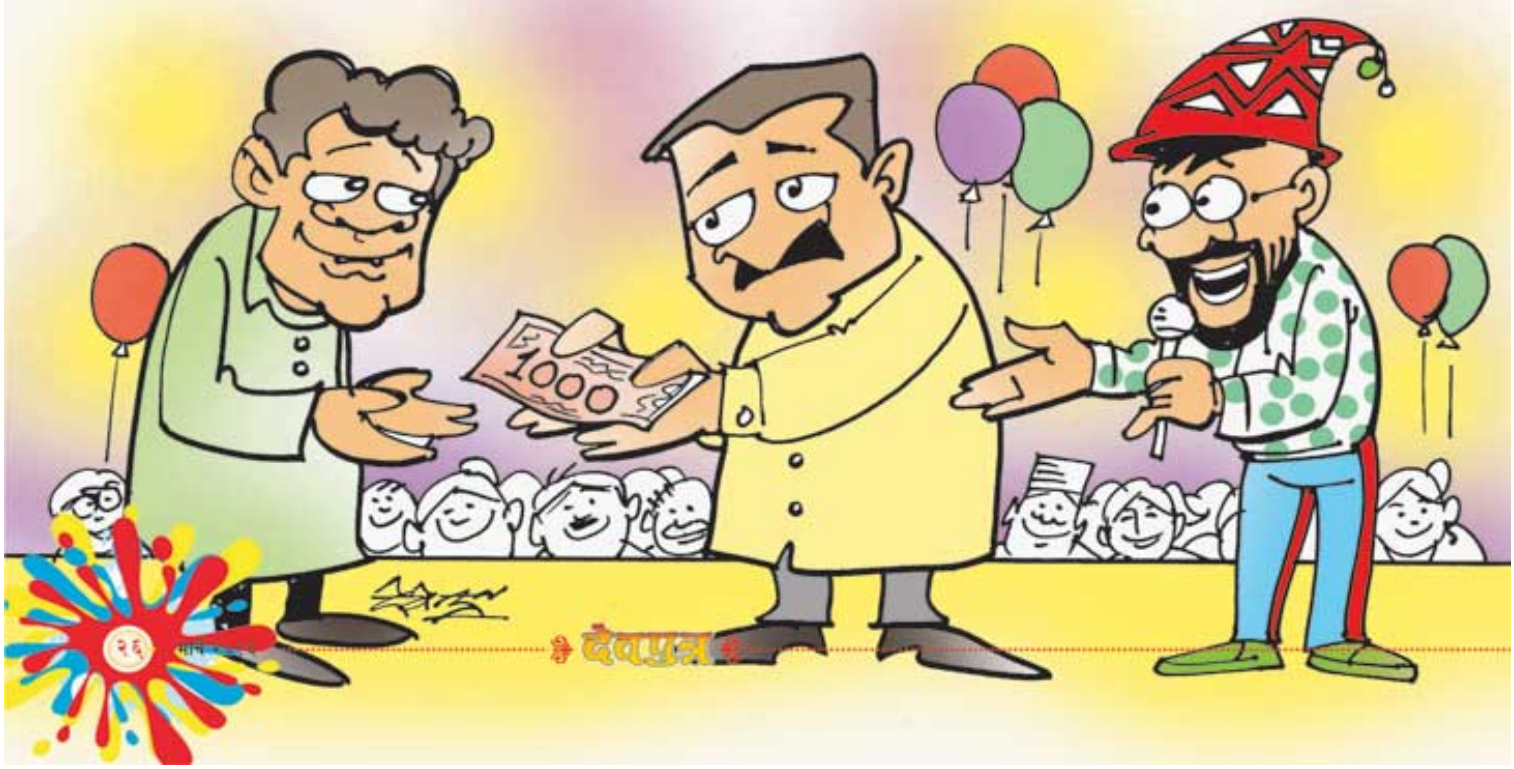

भाई ने पुकारा। बद्रीनारायण धीरे-धीरे मुस्कराते हुए प्रकट हुए। दर्शक में से किसी ने व्यंग्य किया- ''अरे यह तो एक दूसरे के पड़ोसी है।'' दूसरे ने जवाब दिया-''तो क्या हो गया, पड़ोसी शत्रु नहीं हो सकते क्या?''

मोहन भाई कहां छोड़नेवाले थे- ''अरे आप दोनों एक दूसरे को पीठ दिखाते हुए क्यों खड़े हुए हैं? अच्छा छोडिए माखनलाल जी अब आप उस दूसरे ढेर में से एक पर्ची उठाइए। उसमें पुरस्कार की कुछ राशि लिखी होगी जिसे आपको बद्रीनारायण जी को सौंपना होगा।''

इंगित स्थान से माखनलाल जी ने एक चिट उठाकर मोहन भाई को पकड़ा दी। चिट पढ़कर मोहन भाई खिलखिला पड़े-''वाह भाई दुश्मन हो तो ऐसा...पूरे एक हजार का इनाम...बधाई हो बद्रीनारायण जी।'' पुरस्कार की राशि सुनकर बद्रीनारायण प्रसन्न हो गए। मोहन भाई ने एक हजार रु. के नोट माखनलाल को पकड़ाते हुए कहा-''लीजिए अपने हाथों से बद्रीनारायण को दे दीजिए।''

अनमने भाव से माखनलाल ने बद्रीनारायण को रुपए पकड़ाए। बद्रीनारायण ने रुपए ग्रहण करते हुए हाथ मिलाया और बोले -''धन्यवाद माखन भाई, इस समय मुझे इन रुपयों की सख्त जरूरत थी। अब आप रात को हमारे घर चाय पर अवश्य आइएगा।'' माखनलाल को सहमति देना पड़ी-''अवश्य, क्यों नहीं?''दर्शकों ने तालियां बजाकर दोनों का अभिवादन किया।

मोहन भाई ने कार्यक्रम का समापन करते हुए कहा- '' तो मित्रो! यह था हमारा अभियान मिलन, जिसमें हमने दो बिछुड़े दिलों को मिलाने का सफल प्रयास किया। हमें उम्मीद है माखनलाल जी अवश्य बद्रीनारायण जी के घर चाय पीने पहुँचेंगे और बात भोजन तक पहुंच जाएगी। यही है हमारे इस रंगबिरंगे त्यौहार का अर्थ। मित्रो! आपको यह कार्यक्रम अवश्य पसंद आया होगा, धन्यवाद।'' दर्शकों ने पुनः तालियां बजाकर मानो उद्देश्य का पुरजोर अनुमोदन किया।

● **इन्दौर (म.प्र.)**

अष्टांक

देवांशु वत्स

	८		१		४		७	
२	४४		३६	३	४०	६	४१	५
	३	४			५		१	
३	३५	१	४२	८	४६		३२	४
	६		२	५		३	८	
८	४६		४१		४४		३८	६
		२	५		८		३	
	३८	८	३६	१	३७	४	३६	२
१		३		६		८		

खेलने के नियम

खड़ी और आड़ी पंक्तियों में १ से ९ तक के अंक आने चाहिए। रंगीन वर्गों में लिखी संख्या उसके चारों ओर बने आठ खानों में लिखी संख्याओं का कुल जोड़ है। पहले से लिखे हुए अंक बदले नहीं जा सकते।

(उत्तर इसी अंक में)

रंगों की दुकान है होली

कविता : कलीम आनंद

इन्द्रधनुष की शान है होली।
रंगों की दूकान है होली।।
धरती पर फागुन उतराया।
भौंरों का गुन-गान है होली।।
ढोल, मंजीरों के सुर जागे,
हुड़दंगी तूफान है होली।।
जाति, वर्ग का भेद न करती,
सबको देती मान है होली।।
उछल-कूद कर धूम मचाओ,
जीवन की पहचान है होली।।

• दिल्ली

रंग

बाल लेखनी : अंकिता बेले

दुनिया देखो कितनी निराली,
रंगों से भरी एक पिचकारी।
हरा है तो कहीं नीला, पीला
जैसे रंगों की फुलबारी।।

• बालाघाट (म.प्र.)

सही उत्तर

दिमागी कसरत

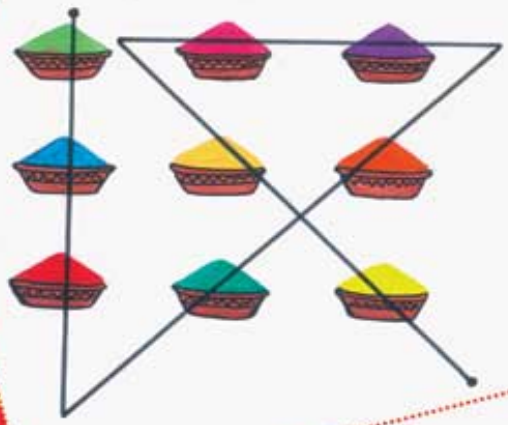

फूलों से

बाल लेखनी : आशीष बाँगेर

फूलों से नित हंसना सीखो
भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डाल से सीखो
हंसकर शीश झुकाना।।

• बालाघाट (म.प्र.)

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) भक्त प्रह्लाद के पिता का नाम था -
(क) कंस (ख) हिरण्यकश्यपु (ग) रावण

(२) भक्त प्रह्लाद की माता का नाम क्या था-
(क) पूतना (ख) ताड़का (ग) कयाधु

(३) भक्त प्रह्लाद का ताऊ जो वराह अवतार द्वारा मारा गया?
(क) शिशुपाल (ख) हिरण्याक्ष (ग) मारीच

(४) भक्त पह्लाद के पिता ने किस देवता की आराधना की थी -
(क) ब्रह्मा (ख) विष्णु (ग) महेश

(५) भक्त प्रह्लाद की बुआ का नाम था-
(क) मंथरा (ख) शूर्पणखा (ग) होलिका

(६) भक्त प्रह्लाद के शिक्षकों का क्या नाम था-
(क) शण्ड-अमर्क (ख) शुक्र-बृहस्पति (ग) सप्तर्षि

(घ) भक्त प्रह्लाद को प्रभु भक्ति का संस्कार किससे मिला-
(क) बृहस्पति (ख) नारद (ग) ब्रह्मा

(८) भक्त प्रह्लाद की रक्षा हेतु विष्णु ने कौनसा अवतार लिया-
(क) वामन (ख) वराह (ग) नृसिंह

(९) भक्त प्रह्लाद के पुत्र का नाम क्या था-
(क) विरोचन (ख) विभीषण (ग) शल्य

(१०) भक्त प्रह्लाद का पौत्र (पुत्र का पुत्र) जो विष्णु के एक और अवतार का कारण बना-
(क) बलि (ख) बाली (ग) वाल्मीकि

(उत्तर इसी अंक में)

कविता बनाइए १६

बच्चो! दिया गया चित्र किसका है यह तो आप पहचानते ही हैं हम चाहते है इस बार आपकी कविता में इनके जैसे बनने के भाव आएं। तो लिख भेजिए अपनी बाल कविता। चयनित कविता मई अंक में प्रकाशित होगी।

बूझो पहेली

पद्मा चौगांवकर

(१)

एक है ठगनी करे कमाल,
दिखती हरी, लेखती लाल।
स्याही नहीं, न रंग गुलाल,
बात जरा सी लगे सवाल!

(२)

बूंद-बूंद जोड़ी रस की,
एक बनी है, कुतुब मिनार।
इस पर चढ़ो, ना दिल्ली देखो,
तोड़ निकालो रस की धार।

(३)

एक गिरस्थन ऐसी देखी,
चूल्हा करे ना चक्की।
भर-भर घड़े चासनी रखती,
अपनी धुन की पक्की।

(४)

लाल रंग का चोला पहने,
गूंगी जोगन अलख जगाए।
अपने मुंह से कुछ ना मांगे,
दिन भर कागज पत्तर खाए।

(उत्तर इसी अंक में)

● गंजबासोदा (म.प्र.)

प्रेरक प्रसंग

ऊँचा आसन

डॉ. श्याम मनोहर व्यास

एक बार एक शास्त्री जी स्वामी दयानंद सरस्वती से शास्त्रार्थ करने आए। वे ऊँचे आसन पर बैठे थे और स्वामी जी नीचे। शास्त्री जी ने बहस के दौरान हँसते हुए कहा– ''स्वामी जी, मेरा आसन आपसे ऊँचा है अतः मैं आपसे अधिक विद्वान हूँ।''

पास ही एक पेड़ के शिखर पर एक काला कौआ बैठा कांव-कांव कर रहा था।

स्वामी जी ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा– ''शास्त्री जी, उस कौवे का आसन आपसे भी ऊँचा है तो क्या वह आपसे अधिक बुद्धिमान है?''

स्वामी दयानंद की बात सुनकर शास्त्री जी

शर्मिन्दा हो गए।

महर्षि दयानंद सरस्वती अपनी तर्कसंगत बुद्धि से सामने वाले को निरुत्तर कर देते थे।

●उदयपुर (राज.)

जानो पहचानो

ओ देश के शहीदों लो देश का प्रणाम

- वे १५ मई १९०७ को नौघरां लुधियाना (पंजाब) में जन्मे थे।
- १६ वर्ष के थे जब माँ ने विवाह की बात छेडी तो निश्चयपूर्वक उत्तर दिया- "माँ में घोड़ी पर नहीं फांसी पर चढ़ूंगा।"
- इनकी विप्लव पार्टी ने क्रांति का संदेश देने कृष्ण विजय नामक नाटक का मंचन किया जिसमें अंग्रेजों को कौरव और देशभक्तों को पाण्डव दिखाया गया था।
- लाहौर में गुप्त रूप से बमों का कारखाना चलाया वहीं गिरफ्तार हुए।
- माँ से व्यक्त निर्णय सत्य हुआ और भारत माँ के लिए फांसी चढ़ गए २३ मार्च १९३१ को।

- २७ सितम्बर १९०७ को लायपुर (पंजाब) की धरती पर इस मानव रूपधारी शेर ने जन्म लिया।
- बचपन में खेत में बंदूक बोते देख टोका तो क्रांतिकारी चाचा को इस बाल क्रांतिकारी भतीजे से उत्तर मिला- "दम्बूक बो रहा हूं इससे कई दम्बूकें उगेंगी जिनसे अंग्रेजों को मार भगाऊंगा।"
- वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सक्रिय सदस्य थे।
- ८ अप्रेल १९२९ को वह सारे ब्रिटिश साम्राज्य को थर्रा देने वाली घटना थी जब उन्होंने अपने साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ दिल्ली असेम्बली में बम फेंका।
- असंख्य भारतवासियों को परतंत्रता की नींद से जगा देने वाली हुंकार करते हुए फांसी पर चढ़ कर सो गया यह शहीद २३ मार्च १९३१ को।

- वे जन्में १९०८ में खड़े पुणे (महाराष्ट्र) में।
- लाला लाजपत राय के अंग्रेजों की लाठी खाकर शहीद होने पर हत्यारे साण्डर्स को पहली गोली में ही मारूँगा। यह शपथ ली भी और निभाई भी।
- अंगीठी में सण्डासी लाल गर्म कर सीन पर तीन निशान बना लिए यह परखने के लिए कि अंग्रेजों के अत्याचारों से वे दहलेंगे तो नहीं।
- जब इन्हें फांसी की सजा दी गई २० हजार लोगों ने जेल को घेर रखा था।
- अंग्रेजों ने भीड़ के डर से इन्हें फांसी देकर शव के टुकड़े-टुकड़े कर नाली से बाहर धकेला और रात के अंधेरे में मिट्टी का तेल डालकर फूंक दिया।
- शहीदों के रक्त से रंगी वह सांझ थी २३ मार्च १९३१।

बच्चो! ये तीनों मित्र एक ही दिन, एक साथ फांसी पर झूले। देश ने इस तिथि को शहीदी दिवस घोषित किया। पहचान गए न कौन थे ये क्रांति के त्रिदेव।

(उत्तर इसी अंक में)

कविता : राममोहन शर्मा 'मोहन'

बसंत न जाएगा

गर्मी, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त बिताए हैं।
तब ऋतुओं के राजा वर बसंत जी आए हैं।।
आगत के स्वागत में, महक रही क्यारी-क्यारी।
पक्षी चहक रहे हैं, फूल रही है फुलवारी।।
भौंरे गाते गीत, तितलियाँ उड़ती फिरती हैं।
नव उमंग ले बच्चों की टोलियाँ बिहँसती हैं।।
पुण्य महोत्सव अपना है माँ सरस्वती पूजन।
जिनकी अनुकम्पा से पाते, विद्या जैसा धन।।
स्मृतियों में सुकवि निराला आज आ रहे हैं।
वीर हकीकत पुनः धर्म की आग ला रहे हैं।।
वीर सुभाष दे गए हैं, जयहिन्द एक प्रिय नारा।
बने विवेकानन्द शिकागो में धर्मी ध्रुवतारा।।
देश धर्म की जो हालत है उसका ध्यान रहे।
प्रश्न यही है कैसे भारत माँ का मान रहे।।
समाधान में खून शहीदों का न भुलाएंगे।
उनका जीवन, जीवन का अनुकरण बनाएंगे।।
घर-घर में आनन्द रहेगा, हन्त न आएगा।
'मोहन' फिर भारत से कभी बसंत न जाएगा।।

● जालौन (उ.प्र.)

रंगने की तरकीब

चित्रकथा - देवांशु वत्स

कहानी : अर्चना सौगानी

बिछुड़े दोस्त मिले

पूरे शहर में होली का त्योहार जोर शोर से मनाया जा रहा था। कहीं रंगों की पिचकारियां चल रही थी तो कहीं गुलाल के बादल उड़ रहे थे। कहीं ढपली की थाप पर फाग के मधुर गीत सुनाई दे रहे थे।

लेकिन राजू आज उदास था। वह अपने घर की खिड़की से सड़क की होली का दृश्य देखते हुए मन में सोच रहा था– ''मैं और नरेश हर वर्ष साथ–साथ होली खेला करते थे दोस्तों के संग खूब ठिठोली किया करते थे। जिन्हें देख सभी हंसा करते।''

पिछली होली की सतरंगी यादों में दोहराते दोहराते अचानक उसकी आंखों से आंसू बह चले। बार–बार उसके मस्तिष्क में बात घूमने लगी–''मैंने नरेश पर चोरी का आरोप बिना सबूत के लगाया था। मेरे कारण वह पूरी कक्षा में चोर कहलाने लगा था। मास्टर जी ने उसे डण्डे मारे थे लेकिन वह हर डण्डे की मार पर कहता जा रहा था –''मैंने राजू की कोई घड़ी नहीं चुराई। जिसे उसके काका ने लन्दन से भेजी थी।''

तीन माह पहले तक तो राजू और नरेश में गहरी मित्रता थी। दोनों एक दूजे के लिए जान की बाजी लगाने को तैयार रहते थे तथा एक दूसरे से कहा करते हम यह दोस्ती कभी नहीं तोड़ेंगे। लेकिन उनकी दोस्ती टूट चुकी थी।

राजू ने देखा सड़क पर कोई टोली आ रही है, तभी उसे नरेश की याद और सताने लगी। सोचने लगा– ''काश! आज होली के दिन नरेश मेरे साथ होता तो होली ठिठोली का कितना आनन्द आता, हम दोनों मित्र मिलकर सतरंगी खुशियां एक दूजे से बाँटते।''

लेकिन उसे फिर बोध हुआ– ''नरेश से अब मित्रता कहाँ है?''

तभी हर वर्ष की भांति नरेश उछलते कूदते आया। उसने जैसे ही राजू को आवाज लगाई तो राजू की आंखों में खुशी के आंसू भर आए वह नरेश के गले से लिपटते हुए बोला– ''मैंने तुम पर चोरी का आरोप लगाया, तब भी तुम मेरे पास होली खेलने चले आए!''

नरेश बोला–''यह तुम्हारी खोई हुई घड़ी लो, दरअसल तुम अपनी घड़ी को उस दिन विद्यालय के पुस्तकालय की आलमारी में रखकर किताबें खोजने लगे थे, जब छुट्टी की घंटी बजी तो तुम पुस्तक लेकर चल पड़े, लेकिन घड़ी अलमारी में ही भूल गए थे। तीन दिन पहले जब मैं पुस्तकालय गया तो वहां के अधीक्षक ने अलमारी से घड़ी मिलने वाली बात दोहराई थी। घड़ी को देखते ही मैं पहचान गया कि यह तो तुम्हारी ही घड़ी है।''

फिर नरेश ने राजू के गुलाल लगाते हुए कहा– ''तुम्हें मेरे प्रति आशंका हुई थी कि मैं चोर हूँ, जबकि मेरे दिल में तुम्हारे प्रति एक सच्ची मित्रता थी।''

होली के दिन अपने मित्र व खोई घड़ी को पुनः पाकर राजू बहुत खुश हुआ। उसने नरेश के गुलाल मलते हुए कहा–''आज यह घड़ी मैं तुम्हें उपहार में देता हूँ।''

नरेश बोला– ''नहीं राजू अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। सबसे बड़ा उपहार तो हमारी दोस्ती और विश्वास है जो कभी भी खोना नहीं चाहिए।''

फिर दोनों दोस्त पिचकारियां लेकर सड़क पर होली खेलने निकल पड़े।

• भवानी मंडी (राज.)

कवियत्री कृष्णा कुमारी की बाल काव्य कृति जंगल में फाग का लोकार्पण बच्चों द्वारा सम्पन्न

कोटा। कृतियाँ लेखक को समाज से जोड़ती हैं। यह वक्तव्य गांधी उद्यान में आयोजित लेखिका और कवयित्री कृष्णाकुमारी की कृति जंगल में फाग के लोकार्पण के अवसर पर साकार हुआ। जंगल में फाग का लोकार्पण बच्चों द्वारा बच्चों के बीच में हुआ। मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार जितेन्द्र निर्मोही रहे।

इस अवसर पर मंच द्वारा **आओ नैनीताल चले**, यात्रा वृत्तांत का लोकार्पण भी मंच द्वारा किया गया। इस कृति के लिए अरविन्द सोरल ने कहा कि पुस्तक में झील, झरनों, पर्वतों, घाटियों, प्रकृति के मनोरम चित्रण के साथ वहां की संस्कृति व अंचल विशेष व भूगोल की जानकारी ने कृति में चार चांद लगा दिए।

जीवन शैली

सच हो जाते हैं सपने सद्संकल्पों से अपने!

प्रो. नन्दकिशोर मालानी

टाटा उद्योग घराने के संस्थापक जमशेद जी नोशेरवान जी टाटा जहाज से जापान के रास्ते संयुक्त राज्य अमरीका जा रहे थे। संयोग से उसी जहाज पर स्वामी विवेकानंद भी यात्रा कर रहे थे। जापान की उस समय हो रही प्रगति से दोनों बहुत प्रभावित हुए। स्वामी जी ने उन्हें प्रेरणा दी कि वे भारत में आधुनिक लौह एवं इस्पात उद्योग की नींव डालें। इतनी बड़ी पूँजी और टेक्नोलॉजी वाला कारखाना हमारे पराधीन देश भारत में स्थापित करना उस समय असंभव जैसा ही था। परन्तु टाटा ने एक सपना देखा संकल्प किया और सन् १९०७ में बिहार में उसे साकार कर दिखाया। दुर्भाग्य से उस समय तक स्वामी जी इस संसार में नहीं थे।

इन्हीं टाटा की एक और प्रेरक कहानी है। एक बार वे अपने एक विदेशी मित्र के साथ सायं भोज के लिए मुम्बई के एक होटल में गए। दरबान ने रोककर कहा– 'आपके अतिथि तो इस होटल में जा सकते हैं लेकिन आप इसमें प्रवेश नहीं कर सकते, क्योंकि यह होटल केवल यूरोपीय लोगों के लिए ही है। अंग्रेजों के जमाने में ऐसा भेदभाव बहुत चलता था। जमशेद जी टाटा का स्वाभिमान इस दर्दनाक घटना से तिलमिला गया। उसी समय मन ही मन उन्होंने एक दृढ़ संकल्प किया। जिसके फलस्वरूप मुम्बई महानगर को अनुपम 'ताजमहल' होटल मिल सका।

अनेक बार हम छोटी सी असफलता अथवा विपरीत परिस्थिति से घबराकर निराश हो जाते हैं। गलत निर्णय भी ले लेते हैं जो स्वयं को और परिवार को दुःखी कर देता है। राष्ट्र को हानि पहुँचाता है।

धन्य हैं, वे लोग जो पराजय और अपमान को चुनौती मानकर उन्हें भव्य भाग्य निर्माण की सामग्री बना लेते हैं। सचमुच अपनी प्रतिभा से वे काटों को फूलों में बदल देते हैं।

आप भी सपने देखें– रात में, दिन में, कभी भी लेकिन वे सार्थक हों इसलिए उन्हें सुदृढ़ संकल्पों का सहारा दें।

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की यह एक काव्य पंक्ति हमें घोर निराशा से बचा सकती है– **'यह हार एक विराम हे, जीवन महासंग्राम है।'**

जो हार को हार नहीं माने उसे जीत अवश्य मिलती है। महाकवि वाल्मीकि श्रीराम के असंख्य गुणों की चर्चा करते हुए 'दृढ़व्रत' को सर्वोपरि मानते हैं। इसे ही सद्संकल्प कहते हैं। प्रण या प्रतिज्ञा इसी के दूसरे नाम हैं।

चलिए, बड़े सपनों की बात अभी छोड़ दें तो भी आपको यह मानना ही पड़ेगा कि सूर्योदय से पहले उठने की छोटी सी अच्छी आदत बनाने के लिए भी इच्छाशक्ति की जरूरत पड़ती है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए और ऊँचाई पर चढ़ने के लिए ज्ञान परम आवश्यक है। लेकिन

उससे भी ज्यादा जरूरी है, जो अच्छा निर्णय लिया है, उसे मजबूती के साथ अपनाना। विवेक को शक्ति के साथ धारण करना ही धर्म है।

सोच समझकर,
एक छोटा सा प्रण कर लें
और उसे त्यागें नहीं।
मन बनाएगा असंख्य बहाने,
मगर फिर उससे भागें नहीं।

श्रुति एक छोटी बच्ची है। उसने काफी पढ़ा सुना तो एक नियम धारण किया कि रात में बिस्तर पर जाने के पहले वह दाँत जीभ साफ करेगी। फिर आलस्य आक्रमण करता है और वह इस नियम को छोड़ देती है। उसे थोड़ी ग्लानि होती है और पुनः इस नियम को धारण करती है। कई बार ऐसा हो चुका है। नियम सधता नहीं और ज्ञान पीछा छोड़ता नहीं। वह मामूली छात्रा भी नहीं है। कक्षा में सबसे अच्छे अंक लाती है। कहीं न कहीं, ऐसी बात हम सभी पर लागू होती है। हमारे कई निश्चय जो बहुत अच्छे होते हैं, इसी तरह बनते और बिगड़ते रहते हैं, पनपते और मरते रहते हैं।

संकल्प का सुदृढ़ पहरा न रखें तो कमजोरियाँ बढ़ती जाती हैं और अच्छाइयाँ टलती जाती हैं।

जो टालेंगे, कल परसों पर,
तो बात जाएगी, बरसों पर।

जो व्यक्ति थोड़ समय में होने लायक साधारण काम को फिर कर लेंगे, ऐसे बहाने से लम्बे समय तक पूरा नहीं करता वह श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार तामस चरित्र वाला है। वह दीर्घ सूत्री और आलसी व्यक्ति कभी भी अपने सपनों को साकार नहीं कर पाता। वह सफल स्वस्थ और सुखी नहीं हो पाता।

यजुर्वेद में बहुत ही अच्छी प्रार्थना की गई है–

'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'

मेरा वह मन कल्याण करने वाले संकल्प को सुदृढ़ता के साथ अपनाए।

वास्तव में हम कमजोर नहीं हैं। हम अमृत के पुत्र–पुत्रियाँ हैं। हमारे नरम इरादे हमें आलसी और विषादी बनाते हैं।

अटल प्रण से हमारे सपनों को प्राण मिलते हैं। छोटा हो अथवा बड़ा, एक अच्छा संकल्प उस सेनापति की तरह होता है जो अपने साथ सैकड़ों हजारों छोटे–छोटे सद्गुणों के सैनिकों को लाता है, और यह दमदार फौज हमारे जाने अनजाने अवगुणों के दुश्मनों को परास्त कर देती है। यह काम शनैः शनैः होता है।

संकल्प के अभाव में प्रतिभा, ज्ञान और सभी साधन खाली पड़े रहते हैं। जमीन पर रखी हुई वह कीमती निर्माण सामग्री किस काम की यदि उसे संकल्प और श्रम के सहारे भव्य भवन में न बदला जाए।

सच यह है कि विपरीत परिस्थितियाँ हमारी अग्नि परीक्षा लेती हैं। एक दृढ़व्रती व्यक्ति दुर्भाग्य को, श्रम के सहारे, धैर्य धारण करने पर, सौभाग्य में परिवर्तित कर सकता है।

हाथ मसलकर, दाँत पीसकर जब हम ठान लेते हैं,
तो आसमान के सितारे भी हमारी बात मान लेते हैं।

• इन्दौर (म.प्र.)
(लेखक देश के प्रख्यात चिंतक, विचारक एवं व्यक्तित्व विकास विशेषज्ञ हैं।)

कविता : शिवचरण सिंह चौहान

बौर

आमों के पेड़ों के ऊपर
डोल रहे हैं बौर।
मीठी-मीठी गन्ध हवा में
घोल रहे हैं बौर।।
आया है बसंत-
सरसों फूली, चिड़ियां चहकी
पहन कोपलों के कपड़े-
अब अमराई महकी
मौसम की किताब के पन्ने
खोल रहे हैं बौर।।
नाच रहीं तितलियाँ
बजाता भौंरा इकतारा
मीठे गीतों की अब
कोयल बहा रहा धारा
बिन बोले हमसे तुमसे
कुछ बोल रहे हैं बौर।।

• कानपुर (उ.प्र.)

त्योहार अनोखा

कविता : गोविन्द भारद्वाज

होली का त्योहार अनोखा,
फागुन का उपहार अनोखा।
लाल-गुलाबी, नीले-पीले,
रंगों का गुलजार अनोखा।
पकी फसल खेत मुस्काते,
धरणी का शृंगार अनोखा।
गया बसंत आ रहा ग्रीष्म
मौसम का उपकार अनोखा।
रंग-रंग की बौछारें हैं,
नभ में भरा गुबार अनोखा।
बैर भाव भुला गले मिल,
मिलता है व्यवहार अनोखा।
प्रह्लाद की भक्ति के आगे,
नत मस्तक संसार अनोखा।

• अजमेर (राज.)

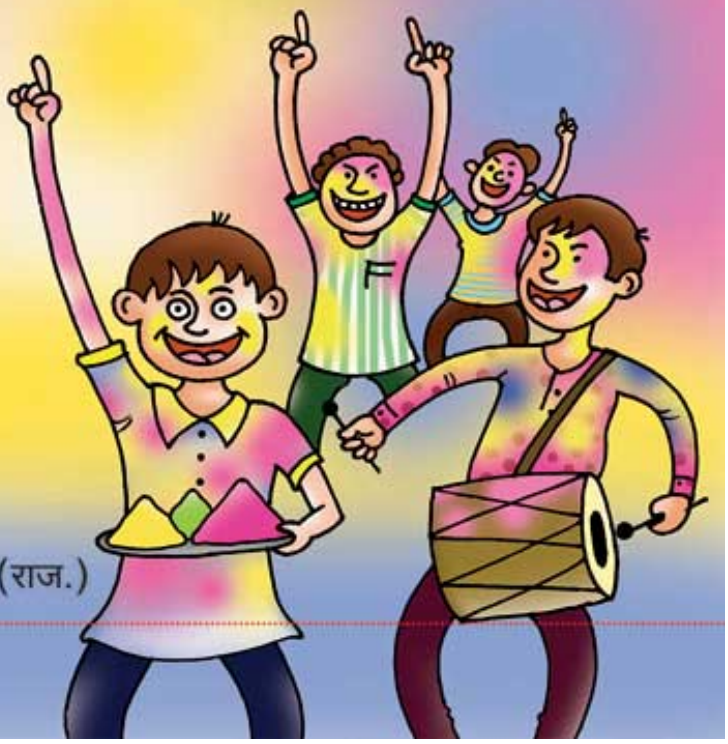

रोचक समाचार

शुभ पन्ने पलटते ही याद कर लेता है पूरी किताब

माँ तो हर बच्चे की प्रथम गुरु होती है। शुभ के साथ भी ऐसा ही था वह तीन साल का हुआ तब तक शिक्षिका माँ को आभास हो गया था कि उसका शुभ विलक्षण बुद्धि का बालक है। वह उसे ज्ञानवर्धक टी.वी. कार्यक्रम दिखाती, ऐतिहासिक कहानियाँ सुनाती। आश्चर्य यह कि तीन साल का शुभ सब एक बार में ही याद कर लेता। प्रतिभा की सुगंध प्रसिद्धि बनने लगी। किसान पुत्र शुभ रामचरित मानस, दुर्गा सप्तशती, हनुमान चालीसा, वैदिक मंत्र कंठस्थ सुना देता। भूगोल और सामयिक विशेष घटना क्रम उसे जुबानी याद रहते।

पत्रकारों ने परीक्षा ली, डाक्टरों ने समझा और मान गए कि शुभ असाधारण प्रतिभा का धनी है। और क्यों न हो आखिर वह रामायण को कंठस्थ सुनाने वाले लवकुश और माँ के पेट में से ही वेद पाठ की गलतियाँ बता देने वाले अष्टावक्र के देश का ही सपूत जो है।

भोपाल समाचार डॉट कॉम से साभार

रंग भरो

चांद मो.घोसी

इस सुन्दर चित्र में अपनी कल्पना से रंग भर इसे और सुन्दर बनाएं।

पं. दीनदयाल जन्मशताब्दी वर्ष

दीना की निडरता

डॉ.वेदमित्र शुक्ला 'मयंक'

एक रात दीना के घर में
घुस आए कुछ डाकू
पकड़ लिया दीना को
गर्दन पर रखकर के चाकू।

कहा- 'क्रांतिकारी हैं हम
जो धन-दौलत हो दे दो,
अंग्रेजों से हम लड़ते हैं
हमसे पंगा मत लो।'

निडर भाव से दीना बोला
'तुम कैसे क्रांतिकारी?
लूट रहे हो अंग्रेजों सा
तुम भी अत्याचारी।'

'क्रांति नहीं ये कायरता है'
सुनकर ऐसी बातें,
चले गए सारे डाकू फिर
मन ही मन पछताते।

दीना की निष्कपट निडरता
से ही हुआ कमाल,
बड़े हुए जब दीना, बच्चो!
बन गए दीनदयाल।

• नई दिल्ली

कविता बनाइए

जनवरी २०१६

के चित्र हेतु चयनित कविता

चंदामामा संग में रहते
मामी मुझे पढ़ाती है
पंखों पर बैठकर परियाँ
दूर देश ले जाती है।

- गीतांजलि सिन्हा गरियाबंद (छ.ग.)

पुस्तक परिचय

रचनाकार-संतोष कुमार सिंह

हाथी पहुँचा सूट सिलाने

२८ मनोरंजक शिशु कविताएँ

मूल्य ४५/-

नन्हे बच्चे प्यारे गीत

शिक्षा और मनोरंजन से भरे १० बाल गीत

मूल्य ३५/-

फिसला पैर गिरा हाथी

२० मनोरंजक शिशु कविताएँ

मूल्य ४५/-

गीत गुंजन

१५ मनमोहक गीत व कविताएँ

मूल्य ३५/-

हाथी गया स्कूल

नन्हे मुन्नों की दुनिया के नन्हे गीत

मूल्य २५/-

गीत सुधा

स्वास्थ्य शिक्षा पर १४ गीत

मूल्य ४८/-

मनभावन बाल कहानियाँ

शिक्षा और मनोरंजन से भरे १० बाल गीत

मूल्य ३०/-

बच्चो बोलो मीठे बोल

ज्ञान व मनोरंजन की १४ कविताएँ

मूल्य ४५/-

कविताएँ विज्ञान की

शिक्षा और मनोरंजन से भरे १० बाल गीत

मूल्य ३०/-

प्रकाशक - साहित्य संगम प्रकाशन, बी-४५, मोतीकुंज एक्सटेंशन, मथुरा ०१ (उ.प्र.)

रंग बिरंगा मेरा छाता-डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका'

बाल साहित्य की विख्यात लेखिका द्वारा नवछन्दों में निबद्ध बहुरंगी कविताएं। ५२ अछूते एवं पारंपरिक विषय पर एवं ७ अनूदित रचनाएं

प्रकाशक- क्षितिज प्रकाशन १६, कोहिनूर प्लाजा, एल फिंस्टन रोड़ खड़की, पुणे ०३

मूल्य १०० रु. पृष्ठ ४८

देवपुत्र

गिनती

कविता : लक्ष्मीनारायण भाला 'लच्छू भैया'

१

एक है सबसे ऊपर देखो, एक है सबसे ऊपर
हम सबका भगवान एक है, उसे ही कहते ईश्वर
नाम बहुत है, रूप बहुत है, फिर भी एक है कैसे?
इसी भेद को जो समझा दे, गुरु मिलें बस! ऐसे।।

२

आओ अब हम दो को समझे-
दो आँखें, दो कान हमारे
हाथ है दो, दो पैर हमारे।
दो पहियों की साईकिल लेकर
गुरु-शिष्य दोनों मिल-जुल कर

३

आओ अब पहचाने तीन-
ब्रह्मा, विष्णु, महेश है तीन
त्रिशूल के कोने हैं तीन।
एक भैया एक बहन और मैं

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

मिलकर होती संख्या तीन।
तीनों मिलकर खोजें चार-
एक-दो-तीन-चार
चार पैर की गाय है देखो
हाथी, भैंसा, बकरी, भेड़।
ऊँट हो चाहे हो जिराफ ही
चाहे सिंह, हिरण या शेर।
चार पैर का ही यह घोड़ा
आओ चढ़कर कर लें सैर।
सैर करें और खोजे पाँच-
पाँच कहाँ भाई पांच कहाँ?
अरे! पांच तो यहीं हाथ में
एक हाथ की अंगुली पाँच।
पांच ही पांडव नाम बताओ
एक युधिष्ठर, दूजा भीम
और तीसरा अर्जुन भैया
चौथा नकुल पाँच सहदेव।
आओ हम भी पाँच-पाँच मिल
खोजे छः को, कहाँ छिपा?
कभी धूप है कभी है वर्षा
और कभी है शीत घनी।
इसी भेद को हमें बताने
छः ऋतुओं की बात बनी।
प्रथम बसंत, ग्रीष्म फिर वर्षा
शरद और हेमंत और शीत।
पहनों कपड़े ओढ़ रजाई
रात हुई अब गाओ गीत।
आओ अब हम खोजें सात
चमक रहे आकाश में तारे
उसमें देखो सात सितारे।
सप्तर्षि ने पाया यह पद
अमर हुए हैं सबसे न्यारे।
कर लो गिनती एक से सात
सोमवार से रविवार तक
सात दिनों तक है सप्ताह।
आओ अब हम खोजें आठ-
आठ भुजाओ वाली माता
असुरों का संहार करो।
कर लो अष्ट भुजा की पूजा
हम सब का उद्धार करें।।
एक-दो-तीन-चार
भैया बहनो! होशियार।
पाँच-छः-सात-आठ
आओ पढ़ लो अगला पाठ।।
अब है गिनती नौ रत्नों की
राजा के दरबार में।
नौ ग्रहों का प्रभाव फैला
धरती और प्रकाश में।
आओ अब हम दस को समझें-
एक अंक से शून्य मिला तो
अहंकार उसमें जागा।
दश-आनन रावण बनकर फिर
एक राम से ही हारा।
दो हाथों की दसों अंगुलियाँ
मिलकर जब करती एक काम।
मिले सफलता मिलती खुशियाँ
और मिले उसको ही राम।
नाचो-खेलो-बोलो राम
राम भजो भाई राम-राम।
हाथ जोड़कर करो नमस्ते
प्रेम से बोलो जय श्री राम।

• भोपाल (म.प्र.)

बदलाव

बाल लेखनी : पियूष शर्मा

कक्षा में एकान्त था। हमारी मासिक मौखिक परीक्षाएँ चल रहीं थी। सभी छात्र अपनी योग्यता व क्षमता से बढ़कर प्रदर्शन कर रहे थे।

'शिखर!' अध्यापक महोदय ने आवाज लगाई। दूसरी ओर तरफ से कोई प्रतिउत्तर नहीं मिला।

''अध्यापक जी ! शिखर तो मेज के नीचे छिपा है।'' मैंने कहा।

''तुम वहाँ क्या कर रहे हो? यहाँ आओ। अध्यापक महोदय थोड़े से नाराज हुए।

शिखर ने आदेश का पालन किया और गर्दन झुकाए उनके सामने स्तंभ की भांति खड़ा हो गया।

शिखर विद्यालय के श्रेष्ठतम छात्रों में से एक था। पर घोर आश्चर्य आज वह अध्यापक महोदय द्वारा पूछे गए किसी भी प्रश्न का ठीक से जवाब न दे सका।

हम सब सकते में आ गए। हमें अपने आँखों व कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। परन्तु सब सोलह आने सच था।

अब तो यह शिखर की रोज की दिनचर्या हो गई। उसने गृहकार्य करना बिल्कुल बंद कर दिया। उसके साथी हितैषी अध्यापक भी अब उससे खफा-खफा से रहने लगे।

जब पानी सिर से उपर हो गया तब प्राचार्य महोदय ने उसके माता-पिता को बुलवाया। समस्या पर घंटों चर्चा हुई, परन्तु कोई उचित समाधान न निकल सका।

एक दिन प्राचार्य महोदय अचानक से शिखर के घर पहुँच गए। पूछे जाने पर उसकी माँ ने बताया कि वह अपने कमरे में कम्प्यूटर पर पढ़ाई कर रहा है।

जब से उसके पिताजी ने कम्प्यूटर खरीदा है तब से वह जरा भी फालतू नहीं बैठता है। कम्प्यूटर पर कुछ न कुछ करता रहता है।

यह सुनकर प्राचार्य महोदय से रहा न गया वे दबे पैर शिखर के कमरे के अंदर दाखिल हो गए। आज शिखर रंगे हाथों पकड़ा गया। वह तो कम्प्यूटर पर बैठा वीडियो गेम खेल रहा था। प्राचार्य महोदय को देखकर वह सहम गया। उन्होंने उससे कुछ न कहा। चुपचाप बैठक कक्ष में आ गए।

''तो यह पढ़ाई चल रही थी।'' प्राचार्य महोदय ने शिखर की माता जी से पूछा।

''वह कम्प्यूटर ही तो चला रहा था। इसमें गलत क्या है।'' उसकी माँ ने सफाई दी।

कम्प्यूटर चलाना गलत नहीं है, किन्तु यदि इसे केवल मनोरंजन के लिए दिनभर चलाया जाता है, तो यह किसी भी होनहार छात्र के उज्ज्वल भविष्य को हमेशा के लिए तहस-नहस कर देता है। यही वजह है कि शिखर का प्रदर्शन बद से बदतर होता जा रहा है। आपके अत्याधिक लाड़-प्यार ने उसे बिगाड़ दिया है। यदि आप चाहती हैं कि उसमें अच्छा बदलाव आए और वह फिर से होनहार हो जाए तो मेरी सलाह है कि उसके मनोरंजन पर अंकुश लगाया जाए अन्यथा वह चौपट हो जाएगा। ''यह चेतावनी देकर प्राचार्य महोदय चले गए। शिखर की माँ ने प्राचार्य महोदय की सलाह का पालन किया और बदलाव वही हुआ जो होना चाहिए था। शिखर पहले की तरह सबका चहेता व होनहार छात्र बन गया।

● मुरैना (म.प्र.)

विष्णुप्रसाद चौहान

चुटकुले

जिंदगी हँसकर बिताना चाहिए
चुटकुले सुनना सुनाना चाहिए

पिता (पुत्र से)– तुम्हारी शाला से शिकायत आई है।
पुत्र– शिकायत कैसे आ सकती है, मैं तो १५ दिन से शाला गया ही नहीं।

*****

शिक्षक (छात्र से) – एक ऐसी जगह बताओ जहां होते तो बहुत सारे लोग है, लेकिन फिर भी तुम अपने आपको अकेला महसूस करते हो।
छात्र – परीक्षा हॉल।

शिक्षक (छात्र)– १५ फलों के नाम बताओ?
छात्र – आम, अमरूद, सेब।
शिक्षक – बहुत अच्छे, तीन हो गए। बाकी १२ बताओ?
छात्र – एक दर्जन केले।

*****

शिक्षक (छात्र से)– अगर तुम एक जंगल में हो और शेर वहां आ जाए तो तुम क्या करोगे?
छात्र – मैं पेड़ पर चढ जाऊँगा।
शिक्षक– वह वहां पर भी आ जाए तो?
छात्र – तो मैं पानी में कूद जाऊंगा।
शिक्षक – ...और अगर वह पानी में भी आ जाए तो?
छात्र– पहले तो आप यह बताइए कि शेर क्या आपका रिश्तेदार है , जो आप इतनी देर से उसकी तरफदारी किए जा रहे हैं।

आपकी पाती

मैं देवपुत्र पत्रिका का नियमित पाठक हूं, यह पत्रिका एक श्रेष्ठ पत्रिका है जो जीवन की राह बताती है। जिससे जीवन संबंधी जानकारी मिलती है। जनवरी अंक बहुत ही अच्छा लगा ओजस्वी बालक बहुत प्रेरणा दाई रहा। देवपुत्र सदैव हमे ऐसी जानकारी देते रहें।

– रवीन्द्र खिसौटिया, बुच्चाखेड़ी (म.प्र.)

----------******----------

देवपुत्र विश्व में सबसे लोकप्रिय और सबसे ज्यादा प्रसारित होने वाली बाल पत्रिका हो गई है इसके लिए शुभकामनाएँ। देवपुत्र हमेशा से ही बाल पाठकों के लिए संस्कारित और बालमन को छूने वाली रचनाएँ प्रकाशित करती है। मैं स्वयं लगातार दस वर्षों से इसका पाठक हूं। देवपुत्र में समय समय पर रुचिकर बदलाव आए है वह भी अच्छे रहे।

– गौरव कुमार गुप्ता, खुजनेर (म.प्र.)

सही उत्तर

ओ देश के शहीदो लो देश का प्रणाम

सुखदेव भगतसिंह राजगुरु

देखो-सीखो-करो

सड़क सुरक्षा से जीवन रक्षा

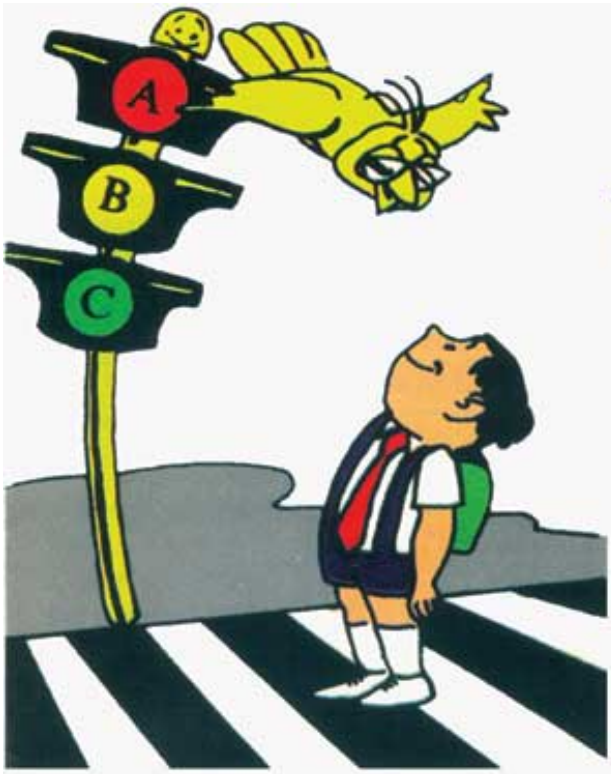

व्यस्त
सड़कों पर
सावधान रहें।

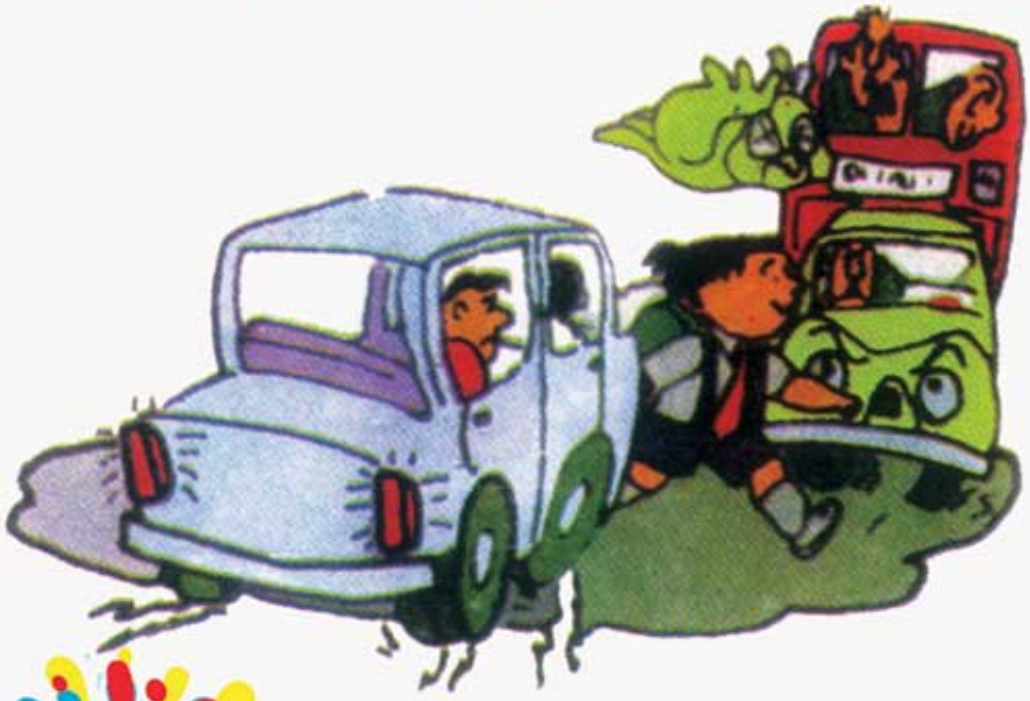

चलती
गाड़ियों के
बीच से
न निकलें

हमेशा फुटपाथ पर ही चलें, सड़क पर नहीं।

सड़क पर वाहन के गुजरतें समय फुटपाथ से नीचे न उतरें।

जहाँ फुटपाथ न हो वहाँ सड़क के दाहिने ओर सामने से आती हुई गाड़ियों की ओर मुंह करते हुए चलें।

यातायात पुलिस आपकी मित्र है, उसकी सहायता लीजिए।

बरसात में सम्भल कर चलें।

बस के पायदान पर न खड़े हो।

सड़क पर फलों के छिलके न फेंके।

चलती गाड़ी से न तो उतरें और न ही चढ़ें

जहाँ जेबरा क्रासिंग उपलब्ध हो वहाँ हमेशा सड़क जेबरा क्रासिंग से ही पार करें।

दाँए देखिए बाएँ देखिए फिर दाएँ देखिए, रास्ता साफ हो तो सड़क पार कीजिए।

ठिठौली

अथ मोबाइल स्त्रोतम्

यदा यदा मोबाइलस्य ग्लानिर्भवति सिग्नलः।
आउट ऑफ रिचसूचनेन जागृताः बहुसंशयाः।।
विच्छेदितं सर्वसम्पर्काः कलहं भवति निश्चितम्।
तस्मात् चार्जिंग रिचार्जिंग वा कुर्वन्तु हे व्याकुल।।
मनसोक्तं चेटिंगं हास्य विनोद टेक्स्टिकम्।
त्वरितं कुरु फार्वर्डिंग सेवा अखण्ड वांच्छितम्।।
टचस्क्रीन नमस्तुभ्यं अंगुलिस्पर्श क्षमस्व मे।
प्रसन्नतार्थं मित्राणां मेसेजं प्रेषितं त्वया।।
इति व्यर्थशास्त्रे पठितमूर्खणां संवादे
मोबाइल स्त्रोत्रं सम्पूर्णम्।।

फुरसती लोग इस मोबाइल स्तोत्र का बारम्बार पाठ करें तो वाई-फाई टावर की कृपा से उनको मुफ्त इंटरनेट सेवा अखण्ड मिलती है एवं जिन्दगी बिना किसी काम-धाम के कटती रहती है। मोबाईल की अनन्य भक्ति करने वाले इस लोक में रहते हुए भीअन्य लोक में विचरण करते हैं। (संस्कृतज्ञों से क्षमायाचना सहित केवल उनके लिए जिनके लिए है।)

बूझो पहेली

(१) मेंहदी (२) गन्ना (३) मधुमक्खी (४) पत्र पेटी (लेटर बाक्स)

शब्द वेध पहेली

१ शे	२ र		३ क	४ म	५ ल
	६ ह	७ ल			८ शे
	९ ना	१० क		११ ज	१२ न
१३ म		१४ ड़ी		१५ ल	
१६ ग			१७ ह		१८ म
१९ न	२० ग		२१ म	२२ ह	२३ ल
	२४ ग	२५ म	२६ ला		२७ ना
२८ म	२९ न			३० द	
३१ क			३२ अ	३३ म	३४ र
३५ र	३६ म	३७ जा	३८ न		३९ ख
	४० त		४१ ल	४२ ड़ा	४३ ना

सही उत्तर प्रश्नमंच

१. हिरण्यकश्यपु २. कयाधू ३. हिरण्याक्ष
४. ब्रह्मा ५. होलिका ६. शण्ड-अमर्क
७. नारद ८. नृसिंह ९. विरोचन १०. बलि

निःशुल्क पुस्तिका

यह आजादी झूठी है

गीतकार, लेखक और स्वराज को समर्पित चर्चित त्रैमासिक पत्रिका 'दाल रोटी' के संपादक अक्षय जैन की नई पुस्तिका 'यह आजादी झूठी है' निःशुल्क उपलब्ध है।

इच्छुक व्यक्ति अपना नाम, पता और पिनकोड़ मो. 080807 45058 पर एम.एम.एस कर सकते हैं।

हम तो गाते फाग

डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका'

होली आई, होली आई
गीत मिलने के लाई
पीली-पीली सरसों फूली
और टेसू के फूल,
फूल-फूल पर बैठी तितलियाँ
उड़ना ही गई भूल
होली आई, होली आई!

कोयल और भौंरों के संग में
हम तो गाते फाग
तुम भी आओ, तुम भी गाओ
अपनी अपनी ढपली के
छोड़ो भी ये खटराग,
देखो बच्चों की टोली आई
होली आई, होली आई!

• पुणे (महाराष्ट्र)

देवपुत्र
के स्वामित्व का विवरण
फार्म-४ (नियम-८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है)	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है)	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार -पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं कृष्ण कुमार अष्ठाना एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(कृष्ण कुमार अष्ठाना)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

अष्टांक

६	८	५	१	२	४	६	७	३
२	४४	६	३६	३	४०	६	४१	५
७	३	४	६	६	५	२	१	८
३	३५	१	४२	८	४६	५	३२	४
४	६	७	२	५	६	३	८	१
८	४६	६	४१	४	४४	७	३८	६
६	४	२	५	७	८	१	३	६
५	३८	८	३६	१	३७	४	३६	२
१	६	३	४	६	२	८	५	७

प्रेरक प्रसंग

मानवता का बिल

प्रस्तुतिः सचिन घोड़गांवकर
अनुवादः संदीप भालेराव

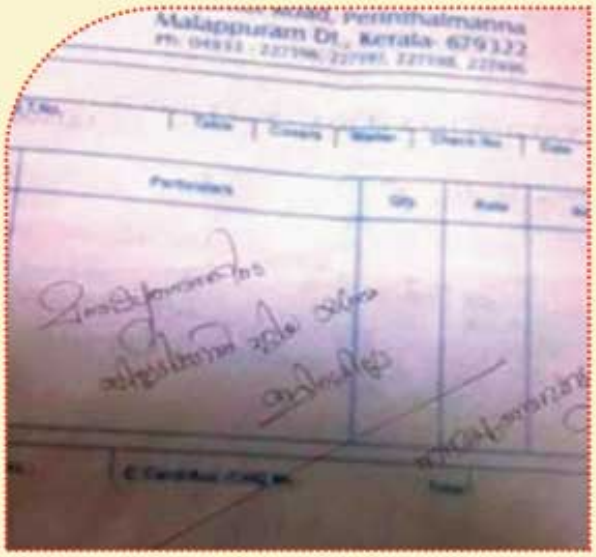

केरल के मल्लापुर भाग के एक रेस्टोरेंट में एक सज्जन भोजन कर रहे थे। बाहर खड़े वे भाई बहन भूख से व्याकुल आस भरी नजरों से भोजन की थाली निहार रहे थे। सज्जन की नजर पड़ी तो दोनों को अंदर आने का इशारा किया, बच्चों के नाजुक पग छोटे-छोटे कदमों से भरते हिच-किचाहट और घबराहट के साथ धीमे-धीमे अंदर की ओर बढ़ चले। भोजन करते-करते ही सज्जन ने इशारे से ही पूछा, क्या खाओगे? मासूम बच्चों की ऊंगली थाली की ओर घूम गई। बच्चों के लिए भी भोजन मंगवाया गया...छोटी हथेलियों में जितना आ सकता था उतना ग्रास बना बना कर पटापट खाने लगे। ऐसा आग्रह तक उन्हें करने की आवश्यकता नहीं पड़ी 'भरपेट खाना है बच्चों!' उनका पूरा ध्यान जैसे थाली पर ही टिक गया था। मासूम और निष्पाप पेट की भूख की भीषण आग शांत हो रही थी। बाल देव भोग लगा कर तृप्त हुए भाई बहन का भोजन...पूरा हुआ। तभी रेस्टोरेंट का बिल भी आ गया। बिल देखकर सज्जन चकित रह गए । बिल पर उन्हें जो नजर आया यह अभूतपूर्व और विस्मरणीय था...बिल पर लिखा था-

''हमारे पास वह मशीन या वह पद्धति नहीं जो मानवता की कीमत आँक सके वह आपकी ही भांति अनमोल है, परमेश्वर आपका कल्याण करें।''

देवपुत्र

कविता : शैवाल सत्यार्थी

श्री शैवाल सत्यार्थी के साथ बाल साहित्य सृजनपीठ के निदेशक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना एवं प्रख्यात साहित्यकार श्री जगदीश जी तोमर ग्वालियर में।

हर माह आया है
देवपुत्र जब -
यूँ लगता है जैसे
हरे-भरे उद्यान में
एक नया पुष्प
खिल जाता है तब...
बड़े भैया की बातें
उनकी भली-भली
सीख और सौगातें-
हर मन को भाती हैं...
उद्यान की सारी कलियाँ
खिल-खिल जाती हैं
प्यारे देवपुत्र के
गीत गाती हैं...
तो, नहीं यह कोई
सामान्य पुत्र
है असामान्य यह-
अनुपम, अभिनव
भारत-पुत्र यह!
विश्व-पुत्र यह !!

● ग्वालियर (म.प्र.)

जय जय माँ, जय भारत माँ

स्वच्छता गीत संकल्प : डॉ. मृदुला सिन्हा
(महामहिम राज्यपाल, गोआ)

भारत माँ बच्चों से पूछे
रो-रोकर एक बात
अपने तन पर कूड़ा ढोती
मैं रहती बेहाल
मुझको कूड़े से छुटकारा
बोलो कौन दिलाए
मेरा बड़ा सवाल
साफ सफाई का सर अंजाम
माँ से मिला स्वच्छ संस्कार
पढ़-लिखकर और खेल-कूदकर
आओ कर लें यह भी काम
सब मिलकर घर साफ कराओ
डस्टबिन में ही कूड़ा डालें
हाथ-पैर-मुँह धोकर आएं
तभी मिलेगा माँ से खाना

माँ कहती घर जल्दी आना
जय जय माँ, जय भारत माँ
शस्य-श्यामला शोभित गात
स्वच्छ धरा का दें हम सौगात
जय-जय माँ, जय भारत माँ
हम अपने नन्हें हाथों से
घर में बाहर दूर-दूर तक
कर देंगे सब साफ सफाई
तेरे ही हम प्यारे लाल
तेरे ही हम प्यारे लाल
तेरी देहरी स्वच्छ बनाकर,
कर देंगे तुझको निहाल
कभी न तू होगी बेहाल।
घर साफ फिर गली-मुहल्ला
विद्यालय का परिसर सुन्दर

तन स्वच्छ और मन हो निर्मल
बढ़ते जाएं हम सब निर्भय
निर्भय बच्चे, निर्मल देश
दूर करेंगें भारत माँ के
सारे छोटे-बड़े क्लेश
अपने कर्मों से कर देंगे,
माँ को निहाल
हम उनके ही नौनिहाल
वे कभी नहीं होगीं बेहाल
जय जय माँ, जय भारत माँ
सस्य-श्यामला शोभित गात
स्वच्छ धरा की दें सौगात
जय-जय माँ जय भारत माँ

देवपुत्र के प्रबंध संपादक डॉ.विकास दवे को गोवा की राज्यपाल डॉ. मृदुला सिन्हा ने प्रधानामंत्री जी के स्वच्छ भारत अभियान का ब्राण्ड एम्बेसेडर मनोनीत किया है। इस गौरव प्रसंग पर उन्हें हार्दिक बधाई हम सब भी हैं उनके साथ इस महाअभियान में।

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

Girls' Residential School at Indore from Classes V to XII

Queens' College

Queens' Maker

कक्षा पाँचवी से होस्टल सुविधा उपलब्ध

CBSE New Generation School

• Swimming Pool of National Standards	• Modern sports facilities available
• Sprawling Campus	• Compulsory Computer Education
• Student - Teacher Ratio 1:30	• Special remedial and enrichment classes
• Extra & competitive exam coaching facility available	• Healthy and Nutritious Food
• Smart Digital Classrooms	• Highly Qualified Faculty
• Variety of subjects available for +2 classes	• Spacious dormitories with all amenities
• Well Equiped Laboratories	• Enriched Library

Khandwa Road, Indore (M.P.) 452017, Contact No.: 0731-2877755-66-77
Visit us at: www.queenscollegeindore.org, E-mail: queenscollegeindore@rediffmail.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित प्रधान संपादक - कृष्णकुमार अष्ठाना